॥ ओ३म् ॥

॥ कृण्वन्तो विश्वमार्यम् ॥

वेद प्रतिपादित मानवीय मूल्यों को
जन-जन तक पहुँचाने हेतु कार्यतत्पर
सशक्त एवं समर्थ प्रान्तीय आर्य संगठन

महाराष्ट्र आर्य प्रतिनिधि सभा का
मासिक मुखपत्र

वैदिक गर्जना

वर्ष १५ अंक ४ अप्रैल २०१५
मई २०१५

वेदों की ओर लौटो...!

युगप्रवर्तक महर्षि दयानन्द

संस्कृत के उद्‌भट विद्वान् व प्रबुद्ध राष्ट्रिय कवि !

प्राचार्य हरिश्चन्द्रजी रेणापुरकर

भावपूर्ण श्रद्धांजलि !

जन्म-१७/९/१९२४ निधन-२३/३/२०१५

स्व.गोपीनाथराव मुंडे व्याख्यानमाला हेतु परली में आमन्त्रित व्याख्याता डॉ.जे.एम.वाघमारेजी का सम्मान करते हुए आर्य समाज परली के मन्त्री श्री उग्रसेनजी राठौर ।

गुंजोटी समारोह में श्रीमती सविता जोशी लिखित मराठी ऋग्वेद भाष्य का प्रकाशन करते हुए स्वामी धर्मानन्दजी, व्रतानन्दजी,प्रकाशजी आर्य, दयाराम बसैये, सुधाकर शास्त्री, राठौर आदि ।

आर्य वीरदल सोलापुर द्वारा आयोजित पारिवारिक सत्संग अभियान में यज्ञ करते हुए पुरोहित पं. वेदसुमन आर्य।

महाराष्ट्र आर्य प्रतिनिधि सभा का

मासिक मुखपत्र

वैदिक गर्जना

सृष्टि सम्वत् १,९६,०८,५३,११६ कलि संवत् ५११६ विक्रम संवत् २०७२

दयानन्दाब्द १९२ चैत्र/वैशाख अप्रैल/मई २०१५

प्रधान सम्पादक
माधवराव देशपांडे
(मो.० ९८२२२९५५४५)

सम्पादक
प्रा.डॉ.नयनकुमार आचार्य
(मो.० ९४२०३३०१७८)

सहसम्पादक - डॉ. ब्रह्ममुनि वानप्रस्थ (मो.०९४२१९५११०४), प्रो.देवदत्त तुंगार (मो. ०९३७२५४१७७७)
प्रा. सत्यकाम पाठक, ज्ञानकुमार आर्य

अनुक्रम

हिन्दी विभाग

१) सम्पादकीयम्..................४
२) श्रुतिसन्देश..................५
३) सत्य का स्वरूप..................६
४) श्रीराम-ऐतिहासिक महापुरूष..................९
५) महाराष्ट्र के श्री जोशी चेन्नई में प्रधान..................११
६) दयानन्द का कमाल (काव्यसरिता)..................१२
७) उत्सवसमाचार..................१३
८) समाचार दर्पण..................१७
९) शोकसमाचार..................१९

मराठी विभाग

१) उपनिषद संदेश/दयानंदांची अमृतवाणी..................२१
२) सुभाषित रसास्वाद..................२२
३) ऋषितुल्य कवीश्वर-प्राचार्य रेणापुरकर..................२३
४) ऋतुराज वसंतातील आरोग्य..................२९
५) आर्य संपादक श्री जडे यांचा हृद्य सत्कार..................३०
६) वार्ता विशेष..................३२
७) संस्कार शिबिर सूचना..................३३
८) प्रांतीय सभेचे उपक्रम..................३४

• प्रकाशक •
मन्त्री, महाराष्ट्र आर्य प्रतिनिधि सभा,
सम्पर्क कार्यालय-आर्य समाज
परली-वैजनाथ ४३१५१५

• मुद्रक •
वैदिक प्रिन्टर्स
महाराष्ट्र आर्य प्रतिनिधि सभा
आर्य समाज, परळी-वै.

-वैदिक गर्जना के शुल्क-
वार्षिक - रु. १००
आजीवन रु. १,०००

इस मासिक पत्रिका में प्रकाशित लेखों तथा विचारों से सम्पादक मण्डल सहमत हो, यह अनिवार्य नहीं है। किसी भी विवाद की परिस्थिति में न्यायक्षेत्र परली-वैजनाथ जि.बीड ही होना

सम्पादकीयम्

बच्चों को नवनिर्माण कैसे ?

बच्चे हमारे देश की अमूल्य सम्पत्ति हैं । राष्ट्र का बनना या बिगडना इन्हीं के हाथों में है । जैसे वृक्ष की डालियों या टहनियों पर जलसेंचन से कुछ लाभ नहीं, बल्कि उस पौध की जडों में जल सिंचना आवश्यक है, ताकि वह एक बडा वृक्ष बनकर सदैव हरा-भरा रहेगा । उसी तरह बडे बुजुर्ग या प्रौढ लोगों को सुधारने में शक्ति व्यय करने के बजाय यदि बच्चों के नवनिर्माण में शक्ति लगायेंगें, तो हमारा समाज व राष्ट्ररूप वृक्ष भलीभांति फूलेगा व फलेगा ।

आज हमारे सम्मुख सबसे बडी समस्या बच्चों-बच्चियों व युवक-युवतियों के नवनिर्माण की है । माता-पिता से लेकर शिक्षाशास्त्रियों व सरकार तक सभी लोग इनके भविष्य को लेकर चिन्तित हैं । आये दिन अखबारों में ढेर सारे समाचार लडके लडकियों के नैतिक अधःपतन से उठनेवाली यौनशोषण, बलात्कार, खून, लडाई - झगडे आदि समस्याओं से भरे पडे हैं । यह सब क्यों बढ रहा है ? इसके पीछे बुरे संस्कार ही कारण हैं । शिक्षा का उद्देश्य होता है - बच्चों के शरीर मन, बुद्धि व आत्मा का विकास ! उन्हें सदाचारसम्पन्न बनाकर उनका सर्वांगिण विकास कर लेना, सभी समाज घटकों का उत्तरदायित्व होता है । किन्तु आज इसका अभाव दिखाई दे रहा है । कहते हैं- 'बच्चे मन के सच्चे होते हैं ।' इनके कोमल मन पर समय रहते ही यदि शुभसंस्कार नहीं डालेगें, तो इन्हें बिगडने में देर नहीं लगती । हमारी मूलभूत आवश्यकता बच्चों व युवकों में शुभसंस्कारों में आधान कैसे करे ?, यही एकमात्र होनी चाहिए । इनके दिलों -दिमाग में पवित्र विचारों की स्थापना हेतु हम कितने दक्ष हैं ? इसकी ओर हमें ध्यान देना बहुत जरूरी है । बजाय इसके इन्हें केवल साक्षर या डिग्रीधारी बनाने से कुछ लाभ नहीं होगा । दुर्भाग्य से इन सब बातों के लिए आज किसी के पास समय नहीं हैं । जो हम सबके भविष्य हैं, उनके निर्माण हेतु यदि हम कुछ नियोजन, त्याग या कार्यक्रम नहीं रखेंगें, तो क्या यह सब कुछ अपने आप होगा ? कोई भी सरकार या प्राईवेट संस्थाएं अथवा संघटन अपने भविष्यकालीन लाभ हेतु विशेष नियोजन करते है । पांच, दस, बीस वर्षों का नियोजन कर तैयारी में लग जाते हैं... जब कि उनका उद्देश्य मात्र भौतिक या जड बातों की सफलता के लिए हैं, किन्तु जो हमारी चेतन पीढी बनेगी तथा जिसे देश का नवनिर्माण होना निश्चित है, उनके लिए कोई भी सुव्यवस्थित नियोजन नहीं है । इस दृष्टि से महाराष्ट्र सभा प्रतिवर्ष संस्कार शिविरों का आयोजन करती हैं, जिसका अनुकरण अन्य सभाएं भी करें ।

श्रुति संदेश

अविद्यादि दोषों का त्याग

यस्मिन्त्सर्वाणि भूतान्यात्मैवाभूद्विजानतः ।

तत्र को मोहः कः शोकऽएकत्वमनुपश्यतः।। (यजु ४०/७)

अन्वयार्थ – हे मनुष्यों ! (यस्मिन्) जिस परमात्मा, ज्ञान, विज्ञान अथवा धर्म के विषय में (विजानतः) सम्यग्ज्ञाता जन के लिए (सर्वाणि) सब (भूतानि) प्राणी (आत्मा) अपने आत्मा के समान (एव) ही (अभूत्) होते हैं, (तत्र) उस परमात्मा में विराजमान, (एकत्वम्) परमात्मा के एकत्व को (अनुपश्यतः) ठीक-ठीक योगाभ्यास के द्वारा साक्षात् देखनेवाले योगी जन को (कः) क्या (मोहः) मोह और (कः) क्या (शोकः) क्लेश (अभूत्) होता है ।

भावार्थ – जो विद्वान् संन्यासी लोग परमात्मा के सहचारी प्राणीमात्र को अपने आत्मा के समान समझते हैं, अर्थात जैसा अपना हित चाहते है वैसे अन्य प्राणिओं के साथ बर्ताव करते हैं, एक (अद्वितीय) परमात्मा की शरण को प्राप्त हो चुके हैं, उन्हें मोह, शोक, लोभ आदि कभी भी प्राप्त नहीं होते । और जो अपने आत्मा को ठीक-ठीक जानकर परमात्मा को जानते है, वे सदा सुखी रहते हैं ।

(महर्षि दयानन्द कृत वेदभाष्य से साभार)

- वैदिक गर्जना के ग्राहकों से निवेदन -

सभी ग्राहकों को वैदिक गर्जना के अंक समय पर भेजे जा रहे हैं । यदि किसी को नही मिलते होंगें, तो वे अपने निकटस्थ डाक कार्यालय से पूछताछ करें । इस पर भी अंक प्राप्ति न होती हो, तो सभा के व्यवस्थापक श्री रंगनाथ तिवार (०९४२३४७२७९२) से सम्पर्क करें । अपनी ग्राहक संख्या अवश्य बतावें । दुबारा अंक भेजे जायेंगें ।

–सभामन्त्री

सभा के आगामी उपक्रम (विस्तृत जानकारी पृष्ठ क्र. ३३ पर)

१) प्रान्तीय सभाद्वारा आगामी ग्रीष्मावकाश में दि. २७ अप्रैल से ३१ मई २०१५ के दौरान दो भागों में परभणी, हदगांव, देगलूर, धर्माबाद, उदगीर तथा औराद (गुंजोटी), औराद (शहा.) शिवणखेड, लातूर (गांधी चौक), किल्लेधारूर इन दस स्थानों पर मानवता संस्कार एवं आर्यवीर दल शिविरों का आयोजन हो रहा हैं ।

२) दि.१ से ७ जून तक हिंगोली में कन्या आर्य वैदिक संस्कार शिविर होगा ।

३) दि.१ से ७ जून तक परली में प्रान्तीय आर्यवीर दल शिविर होगा ।

सत्य का वास्तविक स्वरूप

-वेदाचार्य डॉ.रघुवीर वेदालंकार (मो.९८६८१४४३१७)

अथर्ववेद (१२/१/१) के 'सत्यं बृहत् ऋतम् उग्रम्...।' इस मन्त्र में पृथिवी के धारक तत्त्वों की गणना की गयी है। यहाँ केवल सत्य पर विचार किया जा रहा है। सत्य का अर्थ केवल वाचिक सत्य अर्थात् सत्य भाषण मात्र नहीं है, अपितु इसका व्यावहारिकरूप अभीष्ट है। इसके अनुसार सत्य का पक्ष लेना, सत्य मार्ग पर आरुढ रहना, असत्याचरण को छोडकर सत्याचरण का ग्रहण इत्यादि रुपों में सत्य काही विस्तार है। सत्य के विस्तृतरुप के विषय में ही महर्षि दयानन्द कहते हैं - **'सत्य के ग्रहण करने तथा असत्य के छोडने में सर्वदा उद्यत रहना चाहिए।'** यहाँ सत्य का अर्थ केवल वाचिक सत्य न होकर व्यावहारिक सत्य ही है, जो पूरे जीवन से सम्बन्धित है।

सत्य से बढकर अन्य कोई धर्म नहीं है - **नास्ति सत्यात् परो धर्मः।** इतना ही नहीं, अपितु सत्य स्वयं ही धर्म है। इसीलिए कहा गया है - **'सत्यं वदन्तमाहुः धर्मं वदतीति।'** अर्थात् सत्य बोलने वाले के लिए कहा जाता है कि यह धर्म को कह रहा है। महाराज युधिष्ठिर सत्य के कारण ही धर्मराज कहलाए थे। महर्षि दयानन्द स्पष्टरूप में कहते हैं - **'सब काम धर्मानुसार अर्थात सत्य औरअसत्य को विचार कर करने चाहिए।'** यहां केवल वाचिक सत्य नहीं है, अपितु दैनिक कार्यों में प्रयुक्त होनेवाला व्यावहारिक सत्य है। अथर्ववेद में इसी व्यावहारिक सत्य को राष्ट्र के धारकतत्त्वों में प्रथम स्थान दिया गया है, केवल वाचिक सत्य को नहीं। यदि व्यावहारिक रुप में सत्य का पक्ष नहीं लिया जायेगा, तो राष्ट्र विप्लवग्रस्त हो जायेगा, नष्ट हो जायेगा। निम्न उदाहरणों से अपनी बात को स्पष्ट करता हूँ -

महाराज शान्तनु का पुत्र देवव्रत पूर्ण युवा, विवाहयोग्य तथा पिता के बाद राज्य का अधिकारी है, किन्तु शान्तनु वृद्धावस्था में एक धीवर कन्या सत्यवती पर आसक्त होकर विवाह प्रस्ताव कर देते हैं। कहानी सबको याद है, वहीं देवव्रत अपने वृद्ध पिता की कामपिपासा की शान्ति के लिए दो प्रतिज्ञाएँ करता है। - १) मैं आजन्म ब्रह्मचारी रहूँगा, जिससे मेरी सन्तान भी मेरे पिता शान्तनु के राज्य की अधिकारिणी नहीं होगी तथा २) मैं स्वयं भी राज्य ग्रहण नहीं करुंगा।

शान्तनु का विवाह हो गया तथा देवव्रत ने अपनी दोनों प्रतिज्ञाओं को पूर्ण करने के कारण भीष्म कहलाए। यह

वाचिक सत्य तो था, किन्तु क्या व्यावहारिक सत्य भी था ? देवव्रत का यह कार्य नितान्त ही असत्य-अधर्मयुक्त था, क्योंकि राज्य का अधिकारी वही था तथा कवि का यह कथन बिल्कुल सत्य ही है कि, 'अधिकार खोकर बैठना यह महा दुष्कर्म है।' देवव्रत ने वृद्ध पिता की वासनापूर्त्यर्थ राज्य छोडकर अधर्म ही किया था। यदि हस्तिनापुर के सिंहासन पर शास्त्रवेत्ता, धनुर्धारी युवराज देवव्रत बैठे होते, तो महाभारत ही न होता तथा यह देश मिट्टि में न मिलता। तब नेत्रों तथा बुद्धि दोनों से ही निपट अन्धे तथा पुत्रमोह में अन्धे धृतराष्ट्र का जन्म ही न होता, दुर्योधन कीं तो बात ही क्या है ? इसकी पुष्टि में मनु कहते हैं-

गुरोरप्यवलिप्तवस्य कार्याकार्यमजानतः
उत्पथप्रतिपन्नस्य कार्यंश्रेयोऽनुशासनम्

यदि गुरु, माता-पिता आदि कोई भी कर्तव्य-अकर्तव्य का विचार न करके गलत मार्ग पर चलने लगें, तो उनकों भी अनुशासित करना ही श्रेयस्कर है, न कि उनकी इच्छापूर्ति! देवव्रत ने यही गलती की। उपनिषद का ऋषि मुक्तकण्ठ से अपने शिष्य को कह रहा है - **यान्यस्माकं सुचरितानि तानि त्वया उपास्यानि नेतराणि**। पुत्र जो भी हमारे सुचरित हो, उनका ही अनुकरण करना, अन्यों का नहीं। यदि देवव्रत ने ऋषि के इस वचन को ही पढ लिया होता, तब भी वह कुमार्गगामी अपने पिता को रोक सकता था तथा उसे रोकना चाहिए था ! तभी यह राष्ट्र सुरक्षित रहता। सत्य धर्म ही राष्ट्र को सुरक्षित रख सकता है, असत्याचरण नहीं। अब सत्य के वाचिक पक्ष को लेते हैं। सत्य बोलने का केवल यही अर्थ नहीं है कि मिथ्या न बोला जाए। इसका एक अति अनिवार्य अंग यह भी है कि जहां आवश्यकता पडे, वहां मुंह बन्द न रखकर सत्य का पक्ष लिया जाए। उदाहरण देखिए - पहला उदाहरण है पितामह भीष्म का। वे कौरवों की उस सभा में भी विद्यमान थे, जब कि महारानी द्रौपदी का चीरहरण हो रहा था। क्या यह सत्य-धर्मयुक्त कार्य था ? शास्त्रज्ञ, विद्वान पितामह उस समय एक शब्द भी नहीं बोले, जबकि उनके सामने ही उनकी कुलवधू की मर्यादा तार-तार की जा रही थी। यदि भीष्म विरोध करते, तो किसी की हिम्मत द्रौपदी को राजसभा में बुलाने की भी नहीं हो सकती थी। भीष्म ने तब असत्य-अधर्म का पक्ष लिया। तब शास्त्रवेत्ता भीष्म को मनु की यह उक्ति स्मरण नहीं हो सकी - '**न ते वृद्धाः ये न वदन्ति सत्यम्**।' अर्थात् जो असत्य के विरुद्ध तथा सत्य के पक्ष में मुंह नहीं खोलते, वे आयु में बडे होने पर वृद्ध कहलाने योग्य नहीं है। भीष्म भी ऐसे ही वृद्ध थे। द्रौपदी का अपमान पूरे राष्ट्र का

अपमान था, जिस कारण आज भी हमारा सिर शर्म से झुक जाता है । वह कैसा पितामह हैं, जिसके सामने उसकी पौत्री स्वरुपा कुलवधू को नंगी किया जा रहा हो तथा वह एक शब्द भी इसके विरुद्ध न बोले । धिक्कार है !

दूसरा उदाहरण - हैदराबाद सत्याग्रह में आर्य समाज यह संगठन जालिम निजाम के विरुद्ध मोर्चा ले रहा था । गैर आर्य समाजी भी साथ देते थे । सत्याग्रहियों पर निर्मम अत्याचार हो रहे थे, किन्तु उस व्यक्ति ने जिसे सत्य तथा अहिंसा का अवतार कहा जाता है, एक शब्द भी इस अन्याय के विरुद्ध नहीं बोला । तभी तो बेधडक उपदेशक कुंवर सुखलाल जी ने कहा था -

हमारी इमदाद न कर प्यारे गांधी !
पर यह तो कहदे कि बुरा हो रहा है।

गांधी को भी राष्ट्रपिता कहा जाता है, किन्तु यही राष्ट्रपिता इस राष्ट्रिय कार्य के समय मौन था । इस सत्य को सरदार पटेल ने इस तरह प्रकट किया था - हैदराबाद में मिलट्री एक्शन तीन दिन में इसी लिए सफल हो सका कि इसकी भूमिका पहले ही आर्यसमाज न तैयार कर दी थी । इसी सत्यवादी राष्ट्रपिता ने घोषणा की थी कि पाकिस्तान मेरी लाश पर बनेगा, किन्तु पाकिस्तान बन गया । सत्य के पुजारी की वह घोषणा कहां गयी ? गांधी के इस असत्य ने ही पाकिस्तान को बनने दिया । यदि उस समय यह महात्मा अपने सत्य पर अटल रहते तो पाकिस्तान न बनता। शक्तिशाली राष्ट्र के दो टुकडे हो गये तथा परस्पर विरुद्ध हो गये, जिसका परिणाम सबके सामने है ही ।

ये उक्त पितामह तथा राष्ट्रपिता इन दोनों के असत्याचरण के कारण यह महान देश बर्बाद हो गया । इन लोगों से सुकरात तथा गैलीलियो जैसे लोग ही अच्छे थे, जो हंसते-हंसते विष का प्याला पी गये, किन्तु अपने सत्य से नहीं डिगे । महर्षि दयानन्द ने मौनव्रत धारण किया हुआ है । पास में ही कोई उच्च स्वर से भागवत का पाठ करने लगा । स्वामी जी मौन तोडकर भागवत का खण्डन प्रारम्भ कर देते हैं । वे चुप भी रह सकते थे, किन्तु सामने असत्य को देखकर तथा सुनकर चुप रहना अधर्म है । एक अन्य अवसर पर वे कहते हैं - 'दयानन्द को तोप के आगे बांध कर भी पूछा जायेगा कि सत्य क्या है ? तो उनके मुख से वेदों की श्रुति ही निकलेगी ।' यही है सत्य का व्यावहारिक रुप ! असत्य-अधर्म को सुनकर तथा देखकर उसके विरुद्ध अनिवार्य रुप में वाचिक तथा अन्य क्रियात्मक प्रतिक्रिया की जाए, यही है सत्य का वास्तविक स्वरुप ! - **बी. २६६, सरस्वती विहार, दिल्ली/**

श्रीराम - एक ऐतिहासिक महापुरूष

-डॉ. मंजुलता विद्यार्थी (प्रधान, आर्य समाज, अकोला)

श्रीरामचन्द्रजी एक ऐतिहासिक महापुरूष हैं, ये हमारे राष्ट्रपुरूष हैं । वे हमारे पूर्वज थे, युगनायक थे । उन्होंने ऋषियों की योजनानुसार अपने समय के तरूण वीरों को राष्ट्रकार्यों में लगाया, जनता को तैयार किया । जन-जन में बैठे हुए रावण-साम्राज्य के भय को दूर कर के उन्होंने सांस्कृतिक आर्य-साम्राज्य की स्थापना की थी ।

ऐसे क्रान्तिदर्शी राष्ट्रपुरूष को पौराणिक कथाओं की आड में अवतारवाद व चमत्कारवाद के पाटों के बीच पीसा गया और इसकी प्रतिक्रियास्वरूप एक ओर तो आज राम और रामायण को काल्पनिक और अनैतिहासिक बताया जा रहा है और दूसरी ओर सामन्तशाही का पोषक दुर्दान्त शासक सिद्ध किया जा रहा है । यहां तो राम के अस्तित्व पर भी प्रश्नचिन्ह लग जाता है । जो लोग राम को काल्पनिक मानते है, वे तो स्पष्ट ही राम को मानते ही नहीं, पर जो राम को ईश्वर मानते हैं, ईश्वर का अवतार मानते हैं, वे भी राम के अस्तित्व को कहाँ मानते हैं ? सम्पूर्ण रामचरितमानस यदि अखिल ब्रह्मांड के अधिपति ईश्वर की लीलामात्र है, तो इसमें जहाँ ईश्वर की ईश्वरता का अपमान है, वहीं राम के महान कर्त्तव्य की परिसमाप्ति भी है ।

आर्य समाज राम को ऐतिहासिक महापुरूष, आर्य कुलभूषण, आर्य-जाति के महान् पूर्वज के रूप में मानता है । आज भी लाखों वर्ष पश्चात् श्रीराम के विमल यश और गौरव का मूल है उनकी धर्मनिष्ठा व उनका स्वधर्म पालन । राम वैदिक धर्मी थे, वेदोक्त वर्णाश्रम धर्म में उनकी दृढ आस्था थी, वे मर्यादापुरूषोत्तम थे । वे शौर्य एवं पराक्रम सम्पन्न आदर्श क्षत्रिय थे ।

राम वर्णाश्रमधर्म का पालन करनेवाले महान व्यक्ति थे । यहां क्षात्रधर्म के पुण्य प्रतीक के रूप में हम राम को देखेंगे । राम के पूर्व क्षत्रिय हतप्रभ हो रहे थे । परशुराम ने पितृवध के बदले में अनेकों क्षत्रिय राजाओं को बडी क्रूरता से मार डाला था । रावण ने वानर राष्ट्र को अपने साथ मिला कर अपने बल को बढा लिया था । दण्डकारण्य और आर्यावर्त्त में भी अपनी छावनियाँ कर के आर्य राजाओं और देव राजाओं पर छापे मारना, ऋषियों के यज्ञों का विध्वंस करना तथा अन्य क्रूर कार्य करना राक्षसों का नित्य कर्म बन गया था । आर्य राजा इतने भयभीत थे कि जब ऋषियों ने राजा दशरथ के अश्वमेध यज्ञ के समय रावण के प्रतिकार की योजना बनाई, तो उन्होंने उस सभा में भी भाग लेने का साहस किया । सर्वत्र त्राहि-त्राहि की पुकार मची थी । ऐसे समय राम ने अद्भुत शौर्य से

क्षात्रधर्म के डुबते हुए पोत को बचाया।

अपने शिक्षणकाल में ही ताडका और सुबाहू का वध करके और मारीच को अपने बल का परिचय देकर उन्होंने क्षत्रियत्व की गरीमा को बढाया था। धनुष्य यज्ञ में सफलता प्राप्त कर के, परशुराम का मानमर्दन कर उन्होंने अपने भावी पराक्रमों का मानबिन्दू कायम किया था। अपनी बुद्धिमता, नीतिज्ञता और पराक्रम से वनवास के अभिशाप को वरदान में बदल कर उन्होंने जीवन जीने की कला सिखाई। दण्डकारण्य में प्रवेश करते ही विराध आदि राक्षसों को मारकर उन्होंने ऋषियों के हृदयों में स्थान प्राप्त कर लिया था, ऋषियों ने उन्हें भरपूर सहयोग दिया। अगस्त्य ऋषि ने उन्हें नवीनतम वैज्ञानिक अस्त्र-शस्त्र दिये, जिनकी सहायता से वे अकेले ही खर, दूषण और उनकी चौदह हजार सेना का ध्वंस कर सके।

सीताहरण के महाशोक के समय में भी वे अपने संतुलन को नहीं खोते। राम की दूरदर्शिता और उद्भट राजनीतिमत्ता का परिचय, सुग्रीव की मित्रता और बालिवध के प्रसंग में मिलता है। विभीषण शरणागति के प्रसंग में राम की राजनीति और क्षात्र तेज दोनों देखें जा सकते हैं। लंका-युद्ध में तो मूर्तिमान काल बन कर वे राक्षस सेना का संहार करते हैं और अंत में दुर्धर्ष रावण को मारकर वे **क्षत्रियशिरोमणि** मे पद को पा लेते हैं। जुलमों से सहमी धरती माता चैन की साँस लेती है और धर्मराज्य, रामराज्य अथवा सांस्कृतिक आर्यसाम्राज्य की शुभ्र चांदनी सब ओर फैल कर अपूर्व सुख शान्ति का विस्तार करती है। वर्णाश्रम धर्म या वैदिक धर्म की शीतल छांह में एकत्रित नर-नारी एक स्वर से **राजा रामचन्द्र की जय** पुकार उठाते हैं। श्रीराम ने लंका विजय कर के वहां स्वयं राज्य नहीं किया, किन्तु वहीं के निवासी रावण के भाई विभीषण को राज्य दे दिया। राम ने किसी निजी स्वार्थ के लिए नहीं, वरन् एक सच्चे राष्ट्रपुरूष के रूप में राष्ट्र गौरव की वृद्धि के लिए ही रावण से युद्ध किया था। सीता तो उसमें निमित्त बन गयी थी। वे भी **निशिचर हीन करो मही** की प्रतिज्ञा पहले ही कर चुके थे। राम भारतीय समाज के प्राण हैं, वे जन-जन में बसे हैं। आदर्श रामराज्य की कल्पना आज भी की जाती है। युगों-युगों से श्रीराम का समुज्ज्वल चरित्र आर्य-जाति के कीर्तिस्तंभ और प्रेरणा स्त्रोत के रूप में मार्गदर्शन करता आया है। जरूरी है कि हम श्रीराम के स्वरूप को समझें, हम केवल उनके चित्र की पूजा न करते रहें, उनके चरित्र की पूजा करें। उनकें महापुरूषत्व से प्रेरणा लेकर हमारा राष्ट्र,व्यक्तिधर्म व राष्ट्रधर्म की दीक्षा लेकर शक्तिमान हो सकता है। ****

प्रेरणा

महाराष्ट्र के श्री जोशी चेन्नई में प्रधान

–एड्. जोगेन्द्रसिंह चौहान (सम्भाजीनगर)

प्रसन्नता की बात है कि महाराष्ट्र निवासी आर्य कार्यकर्त्ता श्री धनंजय बलवंतराव **चेन्नई(तमीलनाडू) आर्य समाज के प्रधान** बन गये हैं। वहां के निष्ठावान् आर्य कार्यकर्त्ता तथा इस समाज के संस्थापक प्रधान श्री जयदेवजी के अनुमोदन व आशीर्वादों से श्री धनंजयजी का इस पद पर सर्वम्मति से चयन किया गया है। श्री जयदेवजी पिछले सात दशक से निरंतर कार्यरत हैं। इन्हें अगले प्रधान के रूप में एक होनहार, कर्तव्यदक्ष और प्रामाणिक विद्वान व्यक्ति की तलाश थी, जो कि उनके सपनों को साकार कर सके। श्री धनंजयजी के रूप में उन्हें एक उत्साही प्रधान प्राप्त हुआ है।

आर्य समाज चेन्नई का कार्य समाजसेवा तथा शिक्षा क्षेत्र में सराहनीय रहा है। सुनामी जैसे आपत्काल में इस समाज ने उल्लेखनीय कार्य किये हैं। इस समाजद्वारा डी.ए.वी.शिक्षा संस्थाएं चलाई जाती हैं, जिनका शैक्षणिक स्तर उँचा होने से तथा यहां मिलनेवाले संस्कारों से सभी लोग प्रभावित है। अभिभावक अपने बच्चों को इन संस्थाओं में प्रवेश दिलाने के लिए उत्सुक रहते हैं।

श्री धनंजय जोशी ये औरंगाबाद (महाराष्ट्र) के आर्य परिवार में जन्में एक उच्चविद्याविभूषित व्यक्ति हैं। ये बी.ई. मेकॅनिकल होने के साथ बीटस् पिलानी से एम.एस.तथा डेन्मार्क विश्वविद्यालय से एम.बी.ए. कर चुके है। इन्होंने विभिन्न विख्यात कंपनियों में उंचे पदों पर रहकर कार्य किया है। जैसे कि वेस्टाज कंपनी (डेन्मार्क) में डायरेक्टर के रूप में तथा वर्तमान में रिन्युपावर विंडटर्बाइन, गुडगांव, दिल्ली में व्हाईस प्रेसिडेंट के पद पर हैं

श्री जोशीजी का जन्म आर्य परिवार में होने से इन्हें आर्य समाज के संस्कार बचपन से प्राप्त हुए हैं। इनके नानाजी पू. उत्तममुनिजी, जो कि मराठवाडा के कर्मठ आर्य संत के रूप में पहचाने जाते थे। इनकी माताजी सौ.सविता जोशी आर्य समाज औरंगाबाद की उपप्रधान हैं। यह एक आर्य विदुषी के रूप में पहचानी जाती है। इन्होंने दयानन्द सरस्वती द्वारा रचित वेदभाष्य का मराठी में अनुवाद किया है जिसे आर्य समाज सम्भाजीनगर ने प्रकाशित किया है।

श्री धनंजय जोशी जी अपने आप में एक आध्यात्मिक व्यक्ति होने से उन्होंने आर्यसमाज के तत्त्वों की वैज्ञानिकता एवं विशुदधता को हृदयंगम किया है। इन्होंने

विभिन्न आर्य समाजों तथा शैक्षिक संस्थाओं व्याख्यान में दिये हैं। अपने निजी कार्यों के साथ ये निरन्तर वैदिक विचारों के प्रचार-प्रसार में संलग्न रहते हैं। इनके पुत्र कु. तपन न्युझीलैण्ड में उच्चशिक्षा प्राप्त कर रहा है। एक मेधावी छात्र होने के साथ ही इसने अल्पायु में सत्यार्थ प्रकाश तथा दर्शन शास्त्रों का अध्ययन किया है। ये दर्शन योग महाविद्यालय रोजड के शिविरों द्वारा संस्कारित हुए।

श्री धनंजयजी के पिता श्री बलवंतरावजी सेवानिवृत्त प्राचार्य हैं तथा माताजी अध्यापन कार्य से निवृत्त होकर आर्य समाज के प्रचार कार्यों में सलग्न है। इनकी धर्मपत्नी सौ. वर्षा गृहकार्यों में दक्ष हैं तथा बडी श्रद्धा से आर्य समाज के उपक्रमों में सहयोग देती है। छोटी कन्या कु. तेजसा अपने माता-पिता के पदचिह्नों पर चलने का प्रयास कर रही है।

ऐसे आर्योचित गुण,कर्म, स्वभाव से युक्त आर्य युवक श्री धनंजयजी जोशी का आर्य समाज चेन्नई के प्रधान पद पर चयन होनेपर उनका आर्य जगत् की ओर से हार्दिक अभिनन्दन एवं शुभकामनाएं!

काव्यसरिता

ऋषि दयानन्द का कमाल

कवि - सुरेशगीर 'सागर'

टंकारा के ऋषि दयानन्द ने कर दिया कमाल।
दिया वेदों का ज्ञान और तोडा पाखंड जाल ।।धृ।।

पण्डिता बन रही माताएं, जो मिला शिक्षा का अधिकार।
वेदों को पढे और पढाएं, बनाए संस्कारी परिवार।
महिलाओं को पहना के जनेऊ, बराबर का किया दर्जा बहाल ।।१।।
टंकारा के ऋषि.....

सच्चे शिव को जाना पहले, बाद जमाने को बताया।
प्रमाण अनेकों दिये, ईश्वर है कण-कण में समाया।
भूत, बुत परस्ती का दयानन्द ने दिया निकाल।।२।।
टंकारा के ऋषि....

देखा न धर्म को किसी जाति-पाति की निगाहों से।
न बांधा धर्म को किसी देश -विशेष की सीमाओं से।
कृण्वन्तो विश्वमार्यम् का 'सागर' रखा ऊंचा खयाल ।।३।।
टंकारा के ऋषि दयानंद ने..

-इन्दिरा श्याम निवास, केशवनगर, अम्बाजोगाई रोड, लातूर

उत्सव समाचार

धुलिया में ऋषिबोधोत्सव सोत्साह

प्रतिवर्ष की भांति इस वर्ष भी आर्य समाज धुलिया (धुळे) द्वारा शहर में महर्षि दयानन्द बोध-उत्सव बडे ही हर्ष एवं उल्लास के साथ मनाया गया । प्रातः महिला सदस्यों ने यज्ञ सम्पन्न किया व स्कूली छात्र - छात्राओं की उपस्थिति में पूरे अनुशासन के साथ ओ३म् ध्वजा फहरायी गयी । तत्पश्चात् उत्साहभरी उमंगों में शोभायात्रा निकाली गयी । शोभायात्रा का उत्साह कुछ अलग ही दिखाई दे रहा था । सबसे आगे दो श्वेत घोंडों पर संवार ओ३म् ध्वजा हाथ में लिए दो बालक इस शोभायात्रा का नेतृत्व कर रहे थे । उनके पीछ - पीछे चलनेवाले विभिन्न विद्यालयों की छात्र-छात्राएं, अध्यापक आर्य नर-नारी ऋषि के गीत गाते जयजयकार लगाते जोश के साथ नजर आये । कुमारनगर चौराहे पर नागरिकों द्वारा शोभायात्रा का स्वागत किया गया । अन्त में आर्य समाज में इसका समापन हुआ । सर्वश्री जितेन्द्र वाधवा, मास्टर अमरलालजी, संतोष पंजाबी, जयगोपालजी योगमुनिजी, प्रो. अखिलेशजी शर्मा आदियों ने शोभायात्रा व वार्षिकोत्सव को सफल बनाने में काफी योगदान दिया ।

आमसेना गुरूकुल का वार्षिकोत्सव

खरियार रोड (ओडिशा) के प्रसिद्ध गुरूकुल आश्रम आमसेना का ४८ वां वार्षिकोत्सव हाल ही में बडी धूमधाम के साथे मनाया गया । महोत्सव का शुभारंभ अथर्ववेद पारायण यज्ञ एवं ओ३म् ध्वजोत्तलन से हुआ । तत्पश्चात् नगर में भव्य शोभायात्रा निकाली गयी । मुख्य समारोह में आर्य जगत् के उच्चे कोटि के विद्वानों व भजनोपदेशकों उद्‌बोधन हुए । इस कार्यक्रम में केन्द्रीय ग्रामविकास राज्यमन्त्री श्री सुदर्शन भगत एव स्थानीय विधायक श्री वसन्तभाई पण्डाजी भी सम्मिलित हुए ।

इस पावन अवसर पर आर्य युवक ब्र. अंकितकुमार व ब्र. महीधर आर्य इन दोनों नैष्ठिक ब्रह्मचर्य की दीक्षा ली । स्व.चौधरी मित्रसेनजी आर्य की पुण्यस्मृति में पू. स्वामी सुधानन्दजी सरस्वती, पू. डॉ. ब्रह्ममुनिजी वानप्रस्थी (प्रधान, महाराष्ट्र आर्य प्रतिनिधि सभा) एवं महात्मा चैतन्यमुनिजी (हिमाचल प्रदेश) का सम्मान २१ हजार रू. की राशि, शौल, श्रीफल एवं अभिनन्दन पत्र प्रदान कर किया गया ।

इसी क्रम में ३० वानप्रस्थियों व १६ आर्य वृद्धों तथा गुरूकुल में दीक्षित ब्रह्मचारियों के माता-पिताओं का भी सम्मान किया गया ।

अंधेरी आर्य समाज का वार्षिकोत्सव

मुम्बई की प्रसिद्ध आर्य समाज, अंधेरी का २८ वां वार्षिक उत्सव दि. २५ से २८ दिसम्बर २०१५ के मध्य उत्साहपूर्वक मनाया गया ।

इस अवसर विश्वशान्ति एवं पर्यावरण शुद्धि के लिए २१ कुण्डीय चतुर्वेद शतक महायज्ञ का आयोजन किया गया, जिसके ब्रह्मापद को गुरूकुल एण्टा के आचार्य श्री वागीशजी शर्मा ने विभूषित किया । पं.श्री प्रभाकर शर्मा ने भजन प्रस्तुत किये तथा आर्ष कन्या गुरूकुल चोटीपुरा की छात्राओं ने वेदपठन किया ।

गुरूकुल कामारेड्डी का वाषिकोत्सव

निजामाबाद (तेलंगणा) जिले के कामारेड्डी तहसील अन्तर्गत नरसन्नापल्ली व राजनपेठ ग्राम के समीपस्थ स्वामी ब्रह्मानन्दजी सरस्वती के मार्गदर्शन में चल रहें **आर्ष गुरूकुल ब्राह्म महाविद्यालय** का वार्षिकोत्सव गत ८ फरवरी २०१५ को मनाया गया । प्रातः स्वामी शान्तानन्दजी एवं श्री आचार्य आशीषजी के सान्निध्य में चल रहे अष्टदिवसीय क्रियात्मक ध्यान योग शिविर का समापन एव वेदेपारायण यज्ञ की पूर्णाहुति हुई । मुख्य समारोह की शुरूआत ब्रह्मचारियों के सस्वर वेदपाठ एवं व्यायाम प्रदर्शन से हुई । छोटे-छोटे बच्चों द्वारा प्रदर्शित विभिन्न व्यायामासन प्रकारों व रस्सी मलखम्ब प्रदर्शन को देखकर आर्यजन मुग्ध रह गये । तत्पश्चात् स्वामी ब्रह्मानन्दजी ने गुरूकुल में चले रहे विभिन्न उपक्रमों को विशद कर समाज व राष्ट्र की रक्षा के लिए आर्षप्रणाली की शिक्षापद्धति पर बल दिया व दानदाताओं से सहयोग की अपील की । परली (महाराष्ट्र) से आमन्त्रित वैदिक विद्वान डॉ. नयनकुमार आचार्य ने बताया कि गुरूकुलीय शिक्षा ही परिपूर्ण शिक्षापद्धति है, जिसमें मानवजाति का सर्वकल्याण निहित है व देश को पतन से बचाया जा सकता है । इस अवसर पर उपस्थित कामारेड्डी तहसील के विद्याशाखाधिकारी के.वी.एस.प्रसाद ने कहा कि पाश्चात्य सभ्यता के कुप्रवाह को रोकने कार्य व देश के चारित्रिक उत्थान का केवल वैदिक विचार ही कर सकेंगें, अन्य विचारों में यह सामर्थ्य नहीं है । वरिष्ठ तेलुगू पत्रकार श्रीनिवासाचार्य ने अपने सम्बोधन में कहा- वैदिक संस्कृति के मूलभूत सिद्धान्त ही विश्व के प्राणिमात्र को पूर्णतः सुखी व समृद्धि बना सकते हैं । पूरे समारोह का संचालन श्री वेदमित्र शास्त्री ने किया ।

समारोह की सफलता हेतु नरेंद्र शास्त्री, कृष्णपाल शास्त्री आदियों ने प्रयास किये ।

आर्य समाज कोलकत्ता का वार्षिकोत्सव

विभिन्न प्रान्तों से भारी संख्या में पधारे सैंकडों आर्यजनों की उपस्थिति में तथा प्रबुद्ध विद्वानों व भजनोपदेशकों के सान्निध्य में आर्य समाज कोलकत्ता का १२८ वां वार्षिकोत्सव हर्षोल्लासपूर्वक मनाया गया। आम्हर्स्ट मार्ग पर स्थित हृषिकेश पार्क में आयोजित इस वार्षिकोत्सव समारोह में अथर्ववेद पारायण यज्ञ, ध्वजोत्तोलन, शोभायात्रा, बालक सत्संग, स्कूली बच्चों के कार्यक्रम श्रद्धानन्द बलिदान दिवस, महिला सम्मेलन, राष्ट्ररक्षा सम्मेलन, वेदसम्मेलन, बंग भाषा कार्यक्रम, शंकासमाधान, अधिवेशन आदि विविध कार्यक्रमों का समावेश था।

प्रमुख मार्गदर्शक के रूप में पधारे व्याख्याता डॉ. धर्मवीरजी आचार्य (अजमेर) व श्री पं. कुलदीप विद्यार्थी (बिजनौर) ने आर्यों को सम्बोधित किया। इनके साथ ही अन्य स्थानिक विद्वानों व मनीषियों के भी बीच-बीच में व्याख्यान होते रहे। आर्य समाज कोलकत्ता के सभी पदाधिकारियों व कार्यकर्त्ताओं ने इस उत्सव को सफल बनाया।

महाराष्ट्र आर्य प्रतिनिधि सभातंर्गत आर्य समाज परली द्वारा संचालित

श्रद्धानन्द गुरूकुल महाविद्यालय, परली- वै.

प्रवेश सूचना

आप सभी को सूचित करते हुए हर्ष हो रहा है कि महाराष्ट्र आर्य प्रतिनिधि सभांतर्गत आर्य समाज परली द्वारा संचालित **'स्वामी श्रद्धानन्द गुरूकुल महाविद्यालय'** में दि.१५ जून २०१५ से पांचवी कक्षा उत्तीर्ण छात्रों को छठी कक्षा में प्रवेश दिये जा रहे हैं। परली शहर के वैद्यनाथ मंदिर से २ कि. मी. दूरी पर सुरम्य पर्वतीय प्रदेश में विद्यमान इस शिक्षास्थली में महर्षि दयानन्द आर्ष विद्यापीठ, झज्जर (रोहतक) से संलग्न आर्ष पाठ्यक्रम चलाया जाता है, जिसमें वेद, व्याकरण, संस्कृत साहित्य के साथ ही अंग्रेजी, हिन्दी, मराठी, गणित, विज्ञान, कम्प्यूटर आदि विषयों का तज्ज्ञ अध्यापकों के सान्निध्य में अध्यापन होता है। निवास, भोजनादि की सुविधा उत्तम प्रकार से की जाती है। गरीब, अनाथ व होनहार छात्रों को निःशुल्क प्रवेश दिया जाएगा।

अतः अपने बच्चों को सुसंकारित कराने व वेदानुयायी बनाने हेतु प्रवेश दिलावें।

सम्पर्क- आचार्य प्रवीण(८८५५०८०६३२),

विज्ञानमुनि(९९७५३७५७११),डॉ.ब्रह्ममुनि (९४२१९५१९०४)

- आचार्य की आवश्यकता -

आर्य समाज पिम्परी (पुणे) द्वारा आधुनिक गुरूकुल शुरू किया जा रहा है। इसके लिए संस्कृत, हिन्दी व अंग्रेजी भाषा के अनुभवी आचार्य की आवश्यकता है।सम्पर्क –मन्त्री, आर्य समाज, म. दयानन्द मार्ग, पिम्परी पुणे–१७/मो. ९३७२४११६३१

पुरोहित व धर्मशिक्षक की आवश्यकता

आर्य समाज अकोला द्वारा डी.ए.वी.इंग्लीश स्कूल चलाया जाता है, जिसमें नर्सरी से दसवी की कक्षाओं में लगभग ९०० विद्यार्थी पढते हैं। इस स्कूल के विद्यार्थियों को नैतिक शिक्षा व सुसंस्कार प्रदान करने तथा व्यायाम, योगासन व प्राणायाम शिविर आदि उपक्रमों में मार्गदर्शन करने हेतु **धर्मशिक्षक** की आवश्यकता है। साथ ही आर्य समाज अकोला में वैदिक सोलह संस्कारों व यज्ञादि कार्यो को सम्पन्न कराने की दृष्टि से सम्पन्न **पुरोहित** की भी आवश्यकता है। अतः गुरूकुल के योग्य स्नातकों से निवेदन है कि वे **धर्मशिक्षक** व **पुरोहित** इन पदों के लिए आवदेन करें। **संपर्क** – डॉ. मंजुलता विद्यार्थी (प्रधान) मो. ०९४२१८३०५६१

डॉ. दिलीप मानकर (मन्त्री) मो. ९४२२८६३१२८

आर्य समाज म.गान्धी मार्ग, अकोला

योग साधना का उत्तम स्थान....सुख–शान्ति का धाम

आर्य वानप्रस्थ आश्रम, परली

आयु के ५०-६० वर्ष बिता चुके तथा गृहस्थाश्रम की जिम्मेदारियों मुक्त, अपनी शासकीय व अशासकीय नोकरियों से सेवानिवृत्त हो चुके तथा सांसारिक मोहबन्धनों से ऊब चुके सज्जन महानुभावों, दम्पतियों के लिए स्वास्थ्य रक्षा, सेवा, स्वाध्याय, आध्यात्मिक साधना हेतु **आर्य वानप्रस्थ आश्रम, परली वैजनाथ जि बीड– (महा.)** में पूरी व्यवस्था है। वे यहां पर आकर ठहर सकते हैं। साथ ही अपनी सेवाओं में कार्यरत व्यक्ति, व्यापारी लोग भी वर्ष में एक या दो बार आकर दस – पन्द्रह दिनों तक रह सकते हैं। यहां पर प्राकृतिक व आयुर्वेदक चिकित्सा, ध्यान धारणा केंद्र, वैदिक ग्रन्थालय, वैदिक अनुसन्धान केंद्र, आदि द्वारा स्वास्थ रक्षा, योग–साधना, स्वाध्याय–चिंतन, लेखन का लाभ उठा सकते हैं। सभी सज्जनों का स्वागत हैं!

– **व्यवस्थापक**

समाचार दर्पण कर्नाटक आर्य प्रतिनिधि सभा का चुनाव सम्पन्न

सुभाष आष्टीकर प्रधान व वासुदेवराव मन्त्री बनें !

कर्नाटक आर्य प्रतिनिधि सभा का चुनाव अधिवेशन दि. १८ मार्च २०१५ को उत्साह पूर्वक सम्पन्न हुआ। पूर्व प्रधान श्री राधाकृष्णजी वर्मा की अध्यक्षता में आयोजित इस अधिवेशन में सर्वसम्मति से पदाधिकारियों का चयन किया गया। हुमनाबाद निवासी कर्मठ आर्य कार्यकर्त्ता व सभा के निवर्तमान मन्त्री श्री सुभाषजी आष्टीकर को प्रधान के रूप में तथा मैसूर के वैदिक धर्मी श्री वी.डी.वासुदेवराव को मन्त्री के रूप चुना गया। विस्तृत कार्यकरिणी निम्न प्रकार से है -

* प्रधान - सुभाष आष्टीकर
* उपप्रधान- नारायणराव चिद्री
* जगन्नाथ शर्मा (शिमोगा)
* एच.पी कुमार (बेंगलोर)
* मन्त्री- वी.डी.वासुदेवराव (मैसुर)
* उपमन्त्री-सुभाष सुत्रावे (बसवकल्याण)
* कोषाध्यक्ष-बालकिशन आर्य (मैसूर)
* प्रचारमन्त्री-आर.कृष्णामूर्ति
* संरक्षक- राधाकृष्णजी वर्मा (बेंगलोर)

इन पदाधिकारियों के साथ ही १५ अन्तरंग सदस्यों का भी चयन किया गया है। नवगठित कार्यकारिणी का अभिनन्दन व उन्हें वैदिकधर्म प्रचार हेतु शुभकामनाएं।

कान्हा गुरूकुल के ब्रह्मचारियों का सुयश

हाल ही में नागपुर के समीपस्थ वर्धा महामार्ग पर संस्थापित **कान्हा आर्ष गुरूकुल** के तीन छात्रों ने बेंगलूर में आयोजित **मनोरमा पुरस्कार** प्राप्त किये हैं। वैदिक सिद्धान्तों में दृढ आस्था रखनेवाले गुरूकुलप्रेमी श्री गोविंदरावजी तासके व उनके परिवार के पूर्ण सहयोग से तथा आचार्य ब्र. धर्मवीरजी नैष्ठिक के आचार्यत्व में गतवर्ष से आरम्भित इस नूतन गुरूकुल के होनहार छात्र ब्र.अंकितकुमार ओमपालसिंह आर्य व ब्र.अभिषेक सतीश आर्य (दोनों शास्त्री द्वितीय वर्ष) तथा ब्र. सन्दीपकुमार मोहनलालजी आर्य (उत्तर माध्यमा. द्वि.व.) इन तीनों ने महर्षि पाणिनी कृत अष्टाध्यायी ग्रन्थ सूत्रार्थ विवरणसहित कण्ठस्थ कर लिये और वे बेंगलोर की अ.भा. शलाका परीक्षा में भाग लेकर **मनोरमा** पुरस्कार के अधिकारी बनें।

इन तीनों ब्रह्मचारियों के इस सुयश ने कान्हा गुरूकुल की कीर्तिलता को वृद्धिंगत किया है। इस उपलक्ष्य में पुरस्कार प्राप्त तीनों छात्रों सहित उनके मार्गदर्शक आचार्य धर्मवीरजी का अभिनन्दन !

'मानवोत्थान हेतु संस्कृत ही परिपूर्ण भाषा'

– डॉ.धर्मेन्द्रजी शास्त्री

'विश्व में फैलती सभी समस्याओं का समाधान केवल प्राचीन वैदिक संस्कृत वाङ्मय द्वारा ही हो सकता है तथा मानवजाति के सभी दुःखों को दूर कर उसे सुखी बनाने के साथही उसके सर्वोत्थान का सामर्थ्य केवल संस्कृत में ही है,' ये विचार है दिल्ली संस्कृत अकादमी के सचिव व ओजस्वी विद्वान प्रो.डॉ.धर्मेन्द्रजी शास्त्री के ।

राणी सावरगांव (ता. गंगाखेड जि. परभणी) के पुण्यश्लोक अहल्याबाई होलकर महाविद्यालय में हाल ही में राष्ट्रीय संस्कृत संगोष्ठी का आयोजन हुआ । इसमें श्री शास्त्रीजी उद्घाटक के रूप में बोल रहे थे । संगोष्ठी के अध्यक्षपद को प्राचार्य श्री डॉ. दळनर सुशोभित किया । इस अवसर पर प्रमुखातिथि एवं बीजभाषक के रूप में सावित्रीबाई फूले पुणे विश्वविद्यालयांतर्गत प्रगत अध्ययन केन्द्र के अध्यक्ष डॉ. रवीन्द्र मुळे उपस्थित थे । अपने प्रेरणादायी उद्बोधन में डॉ. धर्मेन्द्रजी ने कहा– मानव को सही अर्थों में मानव बनाने का सामर्थ्य संस्कृत के सिवा किसी अन्य भाषा व साहित्य में नहीं है। विश्व के अन्य भाषा वाङ्मय की तुलना में संस्कृत का स्थान सर्वोपरि है । संस्कृत की एक-एक सूक्ति मानवमात्र को गौरव के साथ जीने हेतु प्रेरणा देती है । उत्तम शिक्षा व्यवस्था आदर्श समाजरचना, स्वच्छ प्रशासन, विश्वकल्याण की भावना, जीवन जीने की सुन्दर कला आदि सभी बातें केवल मात्र विशुद्ध वैदिक संस्कृत वाङ्मय में विद्यमान है । इस संगोष्ठी में सर्वश्री प्रा.अखिलेश शर्मा, डॉ.नयनकुमार आचार्य,डॉ. वीरेंद्र शास्त्री, प्रा. अरूण चव्हाण, दिगंबर देवकते आदियोंने अपने शोधपत्र प्रस्तुत किये ।

श्रद्धानन्द गुरूकुल फार्मेसी, परली-वै.

आर्य समाज परली द्वारा संचालित श्रद्धानन्द गुरूकुल फार्मेसी में सम्प्रति नई-नई आयुर्वेदिक औषधियां बनाई गयी हैं । आयुर्वेद के विशेषज्ञों द्वारा त्रिफला चूर्ण, अविपत्तिकर चूर्ण, लवणभास्कर चूर्ण, सितोपलादिचूर्ण स्वादिष्टचूर्ण, च्यवनप्राश, आयुर्वेदिक चाय, ब्राह्मी आंवला तेल, आंवला कैन्डी, गोतीर्थासव आदि औषधियाँ बनाई गयी हैं । अतः सभी आयुर्वेद प्रेमी बंधुओं से निवेदन हैं कि वे शीघ्र ही गुरूकुल फार्मेसी से सम्पर्क कर इन बहुगुणी औषधियों को खरीदकर स्वास्थ्य लाभ उठावें तथा अन्यों को भी प्रेरित करें । **सम्पर्क – श्री विलास बनसोडे ९०११६०४६११**

शोक समाचार

संस्कृत कवि प्राचार्य रेणापुरकर का निधन

संस्कृत के जानेमाने उद्भट विद्वान व राष्ट्रिय कवि प्राचार्य श्री हरिश्चंद्रजी रेणापुरकर का दि. २३ मार्च २०१५ की संध्यावेला में देहावसान हुआ । मृत्युसमय उनकी आयु ९२ वें वर्ष की थी । वे अपने पश्चात् पत्नी श्रीमती सत्यवती, पुत्र श्री सुधीर, स्नुषा सौ. सीमा, दो कन्याएं डॉ. अंजली धामणगांवकर, डॉ. संध्या फडके, पौत्र- दोहित्रादि परिवार को छोडकर संसार से विदा हुए ।

दिवंगत श्री रेणापुरकरजी की देश -विदेशों में प्रख्यात संस्कृत कवि के रूप में पहचान रही है । लगभग १२ काव्यग्रन्थों का सृजन कर उन्होंने आधुनिक युग के श्रेष्ठ कवियों में ऊंचा स्थान प्राप्त किया है ।

उनकी इस सुरभारती सेवा के लिए गतवर्ष ही उन्हें केंन्द्र सरकार द्वारा **महर्षि बादरायण व्यास पुरस्कार** से सम्मानित किया गया । इससे पूर्व इन्हें उ.प्रदेश, महाराष्ट्र इन दो राज्य सरकारों तथा विभिन्न सेवाभावी संस्थाओं द्वारा पुरस्कृत किया गया है । देश की शीर्षस्थ संस्कृत पत्र-पत्रिकाओं व आर्य समाज के विभिन्न मासिक व साप्ताहिक पत्रों में समय - समय पर आपकी संस्कृत पद्यरचनाएं प्रकाशित होती रही । है । आकाशवाणी व दूरदर्शन कार्यक्रमों में आपकी काव्यपाठप्रस्तुति के साथ ही आपने संस्कृत की राष्ट्रीय, अन्तर्राष्ट्रिय, प्रान्तीय संगोष्ठियों में मुख्यातिथि के उपस्थित रहकर सम्बोधित किया है।

बचपन से ही आपपर आर्य समाज के सुसंस्कार रहें । आपका अध्ययनकाल बहुतही प्रतिकुलताओं से गुजरा, फिर भी हार न मानते हुए आप जीवनभर संघर्ष करते रहे । आर्य विचारों के प्रभाव के कारण आपने मनुष्यकृत जातिबन्धनों को तोडकर अन्तरर्जातीय विवाह किया । एक रससिद्ध कवि होने के साथ ही आप कर्मठ आर्य कार्यकर्त्ता, छात्रप्रिय अध्यापक, कुशल प्रशासक व चिन्तनशील साधन रहे हैं ।

स्व.रेणापुरकरजी के पार्थिव पर दूसरे दिन प्रातः लातूर की मारवाडी स्मशानभूमि में पूर्ण वैदिक पद्धति से अंतिम संस्कार किये गये ।

इस अवसरपर आयोजित श्रद्धांजलि सभा में सर्वश्री डॉ.जनार्दनरावजी वाघमारे (पूर्व सांसद) , डॉ. ब्रह्ममुनिजी (सभाप्रधान), प्राचार्य वेदमुनिजी, डॉ. चंद्रकान्तजी गर्जे, प्रो.ओमप्रकाशजी होलीकर, डॉ.विजया शेंडगे, बस्वराज उटगे, ज्ञानकुमार आर्य, राजेन्द्र दिवे, हंसराज बाहेती, धर्मदीप लोखंडे, आनन्द पाटिल, राजेश्वर बुके, सोमनाथ रोडे, डॉ.नयनकुमार आचार्य आदियों ने श्रद्धासुमन अर्पण किये ।

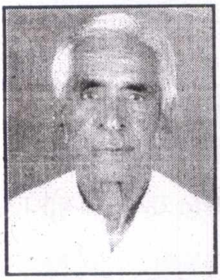

दयालदासजी रेलन का निधन

आर्य समाज, धुलिया के वरिष्ठ सक्रिय कार्यकर्त्ता व कोषाध्यक्ष श्री दयालदासजी मुरलीधरजी रेलन का दि.११ मार्च २०१५ को प्रातः वृद्धापकालीन अवस्था से देहावसान हो गया। वे ७८ वर्ष के थे। उनके पश्चात् घर में धर्मपत्नी धनवन्तीबाई, ५ सुपुत्र व एक कन्या, बहुएं, दामाद, पौत्रादि परिवार विद्यमान है।

श्री दयालदासजी का आर्य समाज धुलिया के नवनिर्माण में विशेष सहयोग रहा है। देश के विभाजन के समय उनका परिवार संजरपुर (बहावलपुर स्टेट) पाकिस्तान से भारत आया और धुलिया में व्यापारी के रूप में बस गया। दयालदासजी के माता-पिता पर पहले से ही आर्य विचारों के संस्कार थे। उनकी अपार वेदनिष्ठा के कारण ही धुलिया में आर्य समाज का बीजारोपण सबसे पहिले उनके घर पर ही हुआ। बाद में वर्तमान आर्य समाज स्थापित कर सभी के सहयोग से भवन खडा किया। श्री मुरलीधरजी इस समाज के संस्थापक प्रधान रहें। पुत्र स्व.दयालदासजी भी अपने पैत्रिक वैदिक संस्कारों का बडी श्रद्धा से पालन करते हुए परिवार व साथियों में इन विचारों का संवर्धन करते रहें। देश की विभिन्न आर्य संस्थाओं को वे मुक्त हस्त से दान देते थे। साप्ताहिक सत्संग व समारोहों में वे मधुरस्वर में भजन गाते थे। अपनी आय का शतांश भाग समाज को देना, यह उनका एक तरह से नियम ही बन गया था। स्व.श्री दयालदासजी के पार्थिव पर सायं ५ बजे पूर्ण वैदिक रीति से आर्यजनों ने अन्तिम संस्कार किये गये। उनकी इच्छानुसार परिवार में १३ दिनों दिनों तक प्रान्तीक सभा के उपप्रधान श्री योगमुनिजी के ब्रह्मत्व में यज्ञ होता रहा। अन्तिम दिन शान्तियज्ञ संपन्न हुआ।

छपते छपते

संस्कृत विद्वान् धर्मदीप लोखण्डे नहीं रहे।

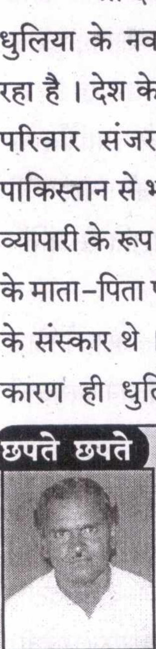

बडे दुःख के साथ लिखना पड रहा है कि आर्य सिद्धान्तों पर चलनेवाले प्रखर वैदिकधर्मी, संस्कृत विद्वान् व लातूर के आर्य कार्यकर्त्ता श्री धर्मदीपजी लोखण्डे आज हममें नहीं रहें। दि.११ अप्रैल को प्रातःलातूर में उनकी सडक दुर्घटना में अकस्मात् मृत्यु हो गयी। इस अकाल घटना से लोखण्डे परिवार व आर्यजनों को भारी झटका लगा है। (विस्तृत समाचार अगले अंक में)

सभी दिवगंत आत्माओं को प्रान्तीय सभा की ओर से भावपूर्ण श्रद्धाजंलि।

॥ ओ३म् ॥

माझ्या मराठीचा बोलु कवतिके। परि अमृतातेही पैजेसीं जींके ।
ऐसी अक्षरेंचि रसिकें । मेळवीन ॥ (संत ज्ञानेश्वर)

मराठी विभाग

उपनिषद सन्देश — ब्रह्मज्ञानी माणूस सर्वोत्तम

यथाऽऽदर्शे तथाऽऽत्मनि यथा स्वप्ने तथा पितृलोके ।
यथाप्सु परीव ददृशे तथा गन्धर्वलोके छायातपयोरिव ब्रह्मलोके ॥

अर्थ - ज्याप्रमाणे आरशात चेहरे इत्यादी अवयव स्पष्ट दिसतात, त्याचप्रमाणे शरीरामधील शुद्ध अंतःकरणात ध्यानयोगाद्वारे परमेश्वराचे दर्शन घडते. जसे स्वप्नावस्थेत इंद्रिय आणि वस्तूंचा संबंध नसूनही जाग्रत अवस्थेच्या संस्कारांमुळे पदार्थ प्रत्यक्ष असल्याप्रमाणे दिसून येतात, त्याचप्रमाणे कर्म आणि उपासनेमध्ये मग्न असलेल्या अवस्थेत परमेश्वराची प्रतीती होते. तसेच ज्याप्रमाणे पाण्यात शरीराचे अवयव दिसत असूनही आरशाप्रमाणे स्पष्ट दिसत नाहीत, त्याप्रमाणे गायनविद्येच्या रसिकांना परमेश्वराच्या प्रतीतीचा आभासमात्र होतो. परंतू ब्रह्मतत्वाला जाणण्याच्या अवस्थेत = निर्बीज किंवा निर्विकल्प समाधीमध्ये ऊन-सावलीप्रमाणे बुद्धी आणि आत्म्याचा भेद स्पष्टपणे प्रतीत होतो. (कठोपनिषद -६/५)

दयानंदांची अमृतवाणी — मूर्तिपूजा अयोग्य

ब्रह्मापासून ते जैमिनी मुनीपर्यंतच्या सर्व ऋषिजनांचे मत आहे की जे वेदविरूद्ध असेल, ते मान्य न करणे आणि जे वेदांच्या अनुकूल असेल, त्याचेच आचरण करणे धर्म आहे. का ? कारण वेद हे सत्य अर्थांचे प्रतिपादक आहेत. याच्या विरूद्ध जे तंत्र व पुराण ग्रंथ आहेत, ते सर्व वेदविरूद्ध असल्याने खोटे आहेत. ते वेदांच्या विरूद्ध आचरण करतात. त्यात सांगितलेली मूर्तिपूजाही अधर्म रूप आहे. माणसाचे ज्ञान जडपूजेमुळे वाढू शकत नाही. याउलट जे कांही ज्ञान असते, ते देखील नाहीसे होते. म्हणून ज्ञानीजनांच्या सेवा व संगतीमुळे ज्ञान वाढते. पाषाण इत्यादींमुळे नव्हे ! काय दगडा-धोंड्याच्या मूर्तिपूजेमुळे परमश्वराचे ध्यान करणे सुलभ होते काय ? मुळीच नाही.

(सत्यार्थ प्रकाश - अकरावा समुल्लास)

सुभाषित रसास्वादः

मूर्ख निंदा

अज्ञः सुखमाराध्यः सुखतरम्आराध्यते विशेषज्ञः ।
ज्ञानलवदुर्विदग्धं ब्रह्माऽपि नरं न रंजयति ।।

करूं ये समाधान जो मूर्ख त्याचें ।
धरूं ये सुखें चित्त पैं जाणत्याचें ।।
न जाणें न नेणें अशा पामराला ।
रिझावूं शकेना विधाता तयाला ।।

(वामन पंडित)

अर्थ – अज्ञ (अडाणी) मनुष्याचे समाधान होण्यास फार त्रास पडत नाही आणि पूर्ण ज्ञात्याचे फार लवकर होते, परंतु धड अज्ञ नव्हे आणि धड पुरा जाणताही नव्हे असा जो थोड्याशा ज्ञानाने गर्विष्ठ झाला, त्याचे समाधान ब्रह्मदेवाच्यानेही होत नाही.

स्वायत्तमेकांतगुणं विधात्रा, विनिर्मितं छादनम् अज्ञतायाः ।
विशेषः सर्वविदां समाजे, विभूषणं मौनम् अपण्डितानाम् ।।

विनिर्मिले झांकण अज्ञतेचे ।
स्वाधीन हें पद्मभवें फुकाचें ।।
मूर्खास हें मौनचि फार साजे ।
सभेस त्यांच्या बहु जाणते जे ।।

(वामन पंडित)

अर्थ – जेथे मोठमोठे सर्वज्ञ पंडित जमले आहेत, अशा सभेत अज्ञजनांस आपले अज्ञान झाकण्यास मौन हे स्वतःच्या आधीन व रामबाण असे उत्तम प्रकारचे साधन ब्रह्मदेवाने करून ठेविले असून प्रसंगविशेषी ते भूषणही ठरते.

(भर्तृहरीकृत नीतीशतक)

मराठी 'सत्यार्थ प्रकाश' प्रकाशन सूचना

अलीकडे मराठी 'सत्यार्थ प्रकाश' या ग्रंथाच्या प्रती संपल्याने मराठी वाचकांची मोठी अडचण झाली आहे. दिवसेंदिवस या ग्रंथाची मागणी वाढत आहे. हा ग्रंथ नसल्याने अनेक जिज्ञासू वाचकवृंद स्वाध्यायापासून वंचित राहू लागले. ही अडचण दूर करण्याचे कार्य सध्या आर्य समाज पिंपरी (पुणे) करीत आहे. या आर्य समाजातर्फे लवकरच **'सत्यार्थप्रकाश'** ग्रंथाचे पुनर्प्रकाशन होत आहे. या मराठी सत्यार्थप्रकाश ग्रंथाची अंदाजे किंमत १५०/– ठेवण्यात आली आहे.

तरी ज्या आर्य समाजांना किंवा संस्थांना व कार्यकर्त्यांना अधिकाधिक प्रती घ्यावयाच्या आहेत, त्यांनी लवकरात लवकर **आर्य समाज पिंपरी, पुणे– १७ (फोन– ०२४०–२७४१००४७)** या पत्यावर संपर्क करावा.

– सभामंत्री

ऋषितुल्य कवीश्वर - प्राचार्य रेणापुरकर

– प्रा.डॉ.नयनकुमार आचार्य

जीवनभर संघर्ष करीत आदर्श व्यक्तिमत्व घडविणारे व देववाणी संस्कृतची आराधना करणारे राष्ट्रपती पुरस्कार विजेते कवी, स्वा.सै.प्राचार्य श्री हरिश्चंद्र रेणापुरकर यांचे नुकतेच (दि.२३ मार्च) निधन झाले. त्यांच्या यशस्वी जीवनप्रवासावर व काव्यसाधनेवर प्रकाश टाकणारा लेख वाचकांसाठी प्रसिद्ध करीत आहोत.

प्रबळ इच्छाशक्ती व प्रयत्नांची पराकाष्ठा या दोन तत्वांच्या बळावर माणूस यशोशिखरावर पोहोचतो व एक सिद्धपुरुष बनतो, हा आजवरचा इतिहास आहे. अगदी आपल्याच भोवतालच्या महनीय व्यक्ती जेंव्हा अशा दिव्यत्वाला प्राप्त होतात, तेंव्हा हृदय भरुन येते व त्यांच्यासमोर श्रद्धेने मस्तक झुकल्याशिवाय राहत नाही, ख्यातनाम संस्कृत कवी श्री रेणापुरकर यांच्या बाबतीत असेच घडले.

संस्कृतसारख्या दिव्योत्तम प्राचीन भाषेत अप्रतिम काव्यनिर्मिती करण्याच्या कामी आपले समग्र आयुष्य वेचणारे श्री हरिश्चंद्र रेणापुरकर हे या दृष्टीने खऱ्या अर्थाने या सद्यकालातील ज्ञानतपस्वी महाकवी होत. त्यांचा खडतर जीवनप्रवास व अपूर्व काव्यसाधना ही नव्या समाजाची जडणघडण करण्याच्या कामी प्रेरणेचा चिरंतन नंदादीप ठरेल, यात शंका नाही. उत्तर महाराष्ट्राच्या विदर्भ भूमीत शेकडो वर्षापूर्वी कालिदासासारखा सामान्य माणूस सर्वोत्तम असा महाकवी बनतो, तर अगदी अलीकडच्या काळात दक्षिण महाराष्ट्राच्या मराठवाडा भूमीत हरिश्चंद्र रेणापूरकरांच्या रुपाने आधुनिक महाकवी उदयास येतो, कांही अंशी ही इतिहासाची पुनरावृत्तीच म्हणावी लागेल.

लातूर जिल्ह्यातील रेणापूर हे छोटेसे खेडेगांव. या लहानशा गावात स्वातंत्र्यपूर्व काळात इ.स.१९२४ च्या १७ सप्टेंबरला पांडुरंग व कृष्णाबाई दरवडे या अल्पशिक्षित पण सुसंस्कारित शेतकरी दाम्पत्याच्या पोटी हरिश्चंद्रांचा जन्म झाला. घरात कसलेच शिक्षणाचे वातावरण नव्हते दुर्दैवाने ९ महिन्याच्या शैशव काळातच आईने जगाचा निरोप घेतला. मातृप्रेमाने पोरके झालेल्या या बाळाचे संगोपन गावातच राहणाऱ्या मामा-मामींनी केले. अशा तऱ्हेने अगदी जन्मापासूनच संघर्षमय जीवनयात्रा सुरु झाली. जन्मगांवी त्यांचे प्राथमिक शिक्षण झाले. पुढील शिक्षणासाठी मात्र लातूरला यावे लागले.

लातूर हे त्या काळी हैद्राबाद स्वातंत्र्य चळवळीसाठीचे प्रसिद्ध केंद्र म्हणून ओळखले जायचे. येथे आर्य समाजाची चळवळ मोठ्या प्रमाणात फोफावत होती. आर्य समाज मंदिरात त्या काळी क्रांतिकारी विद्वानांची नेहमी रेलचेल असायची. माध्यमिक शिक्षण घेत असतांना कुमारवयीन हरिश्चंद्र हे आर्य समाजाकडे आकृष्ट झाले. त्यांची बौद्धीक क्षमता फारच विलक्षण स्वरुपाची होती. याच दरम्यान उत्तममुनिजी (डी.आर.दास) यांच्यासारखे ज्ञानतपस्वी या होतकरु मुलास भेटले. नेहमी साप्ताहिक सत्संग व कार्यक्रमात येण्याजाण्यामुळे हरिश्चंद्राची ज्ञानतृष्णा वाढत गेली. विद्वानांची संस्कृतप्रचुर भाषणे ऐकून त्यांच्या मनात संस्कृत भाषा शिकण्याची इच्छा प्रबल झाली. पण निजामी राजवट असल्याने शाळेत संस्कृत शिक्षणाची सुविधा नव्हती, तर हरिश्चंद्र हे ब्राह्मणेतर असल्याने खाजगी स्वरुपात संस्कृत शिकवावयास कोणीही तयार झाले नाही. लातूरला दहावीपर्यंतचे शिक्षण घेतल्यानंतर ते औरंगाबादला आले. येथील शासकीय महाविद्यालयात इन्टरला प्रवेश घेतला. पण इथेही मागील वर्षी दहावीला संस्कृत विषय नसल्याने संस्कृत विषय घेता आला नाही. संस्कृत शिकण्याच्या ध्येयाने प्रेरित झालेल्या या किशोरास एका कोकणस्थ सज्जन गृहस्थाच्या शिफारसीमुळे महाविद्यालयाच्या प्राचार्यांनी संस्कृत विषय शिकण्याची परवानगी दिली. मग काय आनंदाला पारावरच राहिला नाही ? म्हणूनच की काय बालपणापासूनच संस्कृतचा गंध नसलेल्या हरिश्चंद्रांनी मोठी गरुडझेप घेतली. मनसोक्त संस्कृतच्या ज्ञानसागरात पोहण्यासाठी मोठी संधी लाभली. अगदी देहभान विसरुन देववाणीची आराधना करण्यास प्रारंभ केला व इंटरच्या पहिल्याच परीक्षेत संपूर्ण निजाम राजवटीत श्री रेणापुरकर हे संस्कृत विषयात सर्वप्रथम आले. त्या काळी मराठवाड्यात एकही विद्यापीठ नव्हते. हैद्राबादच्या उस्मानिया विद्यापीठांतर्गत मराठवाड्यातील सर्व पदवी परीक्षा दिल्या जात. या विद्यापीठाच्या बी.ए. पाठ्यक्रमात रेणापुरकरांचा गुणवत्तेत अगदीच पहिला क्रमांक राहिला. पुढे एम.ए. (संस्कृत) करण्यासाठी ते हैद्राबादला गेले. दोन वर्षात वैदिक व अर्वाचीन संस्कृत साहित्याचा अभ्यास केला. सर्व प्राचीन ग्रंथ सूक्ष्मपणे अभ्यासले. वेद-उपनिषदांबरोबरच, वेदांगे, उपांगे, रामायण, महाभारत, गीता, तसेच दर्शन साहित्याचा अभ्यास केला. कालिदास, भास, भवभूतींची काव्ये व नाटके, बाणभट्ट, भारवी, श्रीहर्ष यांचे वाङ्मय आणि विदुर, शुक्र,

चाणक्य, भर्तृहरींची नीतीकाव्ये उत्साहाने अभ्यासली. याच युवा अवस्थेत कविता करण्याची प्रवृत्ती बळावू लागली व संस्कृतात छोट्या-छोट्या काव्यरचना करु लागले. एवढा प्रचंड अभ्यास केला की, एम.ए. (संस्कृत) मध्ये ते विद्यापीठात सर्वोच्चस्थानी राहिले व गुणवत्ता शिष्यवृत्ती प्राप्त केली.

विद्यार्थीदशेतच ते राष्ट्रप्रेमाने भारावले. तत्कालीन हैद्राबाद राजवटीत लोकांवर होणारे अत्याचार व अन्याय हरिश्चंद्रांना सहन होत नसत. म्हणूनच त्यांनी हैद्राबाद स्वातंत्र्य संग्रामात भाग घेतला व भूमिगत राहून कार्य केले. पदव्युत्तर शिक्षणानंतर प्राध्यापक बनून त्यांनी विद्यादानाचे पवित्र कार्य सुरु केले. सुरुवातीच्या काळात श्री रेणापुरकर हे वरंगल येथील शासकीय महाविद्यालयात प्राध्यापक म्हणून रुजू झाले व नंतर कर्नाटकातील गुलबर्गा, शिमोगा, चिकमंगलूर आदी ठिकाणी जवळपास २० वर्षे संस्कृतचे प्राध्यापक, प्रपाठक व अधिव्याख्याते बनून कार्यरत होते. शेवटी गुलबर्गा येथील शासकीय महाविद्यालयात प्राचार्यपद भूषवून १९८० साली सेवानिवृत्त झाले. आपल्या अध्यापनकाळात एक विद्यार्थीप्रिय व विषयतज्ज्ञ प्राध्यापकाच्या रुपाने त्यांनी सेवा बजावली. प्राचार्यपदी असतांना कडक धोरणे राबवून महाविद्यालयाचे प्रशासन उत्तमरित्य हाताळले.

सेवानिवृत्तीनंतर श्री रेणापुरकरांनी आपला सारा वेळ संस्कृत काव्यनिर्मितीसाठी वाहिला. जवळपास २५ ते ३० वर्षे गीर्वाणभारतीच्या काव्यकुसुमांची उधळण करीत एकाहुन एक अशा सरस काव्य रचना केल्या. रेणापुरकरांना एक रससिद्ध श्रेष्ठ राष्ट्रकवी बनविणारा हाच तो सुवर्णकाळ! इतर सेवानिवृत्त झालेली अनेक मंडळी आपला वेळ टाईमपास म्हणून फुकट वाया घालवितात किंवा कांहीजण मुलां-नातवांच्या भविष्याची चिंता करीत अथवा जमीन-जुमला, व्यापार-व्यवसायाच्या विचारात किंवा घरबसल्यास मौज-मजेत वेळ घालवितात. तर कांही जणांना आजारपण, रोगराई जडते. पण श्री रेणापुरकरांचा उत्तरार्ध हा मात्र काव्यरुपी अमृताचे रसपान करण्यात व्यतीत झाला. याचा चांगला परिणाम असा की, श्री रेणापुरकर हे आधुनिक युगाचे एक प्रख्यात रससिद्ध राष्ट्रकवी बनले.

त्यांच्या काव्यसाधनेचा आलेख हा नेहमी चढता राहिलेला आहे. आजपर्यंत त्यांनी बारा संस्कृत काव्यग्रंथांची निर्मिती केली आहे. यात दीर्घकाव्य, खण्डकाव्य, लहरीकाव्य, अभिनंदनपरकाव्य, शोकपरकाव्य आदींचा व तसेच कांही स्फुट रचनांचा समावेश होतो. श्री

रेणापुरकरांचा **काव्योन्मेषः** हा पहिला काव्यसंग्रह सन १९७९ साली प्रकाशित झाला. यात जवळपास ४२ कवितांचा समावेश आहे. या काव्यग्रंथाला संस्कृतचे तत्कालीन प्रकांड पंडित व मराठी विश्वकोष निर्मिती मंडळाचे प्रणेते तर्कतीर्थ लक्ष्मणशास्त्री जोशी यांची प्रस्तावना आणि प्रसिद्ध स्वा.सै.व मराठी संस्कृतचे गाढे अभ्यासक वि.पा.देऊळगावकर यांची संमती लाभली आहे. **काव्योन्मेषः** हे लहरीकाव्य पंडितराज जगन्नाथाच्या **गंगालहरी** काव्याप्रमाणे ओळखले जाते. यात वेद, महर्षी दयानंद, स्वामी विवेकानंद, महात्मा गांधी, लाला लाजपतराय, लालबहादुर शास्त्री यांच्या जीवन व कार्यावर प्रकाश टाकण्यात आला आहे. तर किल्लारी परिसरात आलेल्या भूकंपाच्या स्थितीचे चित्रण भूकंपलहरी काव्यविभागात झाले आहे. त्यानंतर **राममंदिरविवादः** व **इंदिरापतनोत्थानम्** हे दोन ऐतिहासिक खंडकाव्य २००५ साली प्रकाशित झाले. २००६ साली **काव्योद्यानम्** या २९ स्फुट कवितांचा काव्यसंग्रह प्रसिद्ध झाला. या काव्यग्रंथात विविध राष्ट्रीय व सामाजिक प्रश्नांचे चित्रण झाले असून कांही अभिनंदनपर कवितांचाही समावेश आहे. याच वर्षी **काव्यनिर्झरः** हा २८ कवितांचे संकलन असलेला काव्यसंग्रह प्रसिध्द झाला. त्यानंतर **काव्यनिष्यन्दः** या काव्यसंग्रहाची निर्मिती झाली. यामध्ये २२ विविध कवितांचा समावेश आहे. त्यानंतर २००७ साली मराठवाड्यातील थोर क्रांतिकारी हुतात्मे श्री श्यामलाल यांच्या जीवन व कार्यावर आधारित **हुतात्मश्रीश्यामलालचरितम्** हे १४४ श्लोकांचे खंडकाव्य प्रसिद्ध झाले. यात तत्कालीन हैद्राबाद स्थितीचे वर्णन व श्यामलाल यांच्या शौर्याची गाथा वर्णिली आहे. याच वर्षी **श्रद्धाकुसुमांजली** नावाचा श्रद्धांजलीपर काव्यसंग्रह प्रसिद्ध झाला. यात देशातील विविध देशभक्त, कवी, विद्वान, राष्ट्रीय नेते आदींना वाहिलेल्या श्रद्धांजलीपर कवितांचा समावेश आहे.

श्री रेणापुरकर यांनी रचलेले **प्राचीनभारतसंस्कृतीयम्** हे दीर्घ महाकाव्य आधुनिक संस्कृत वाङ्मयाला दीपविणारे आहे. यात प्राचीन भारताचा गौरवमय इतिहास आणि भारतीय संस्कृतीच्या नीतीमूल्यांची वर्णने मोठ्या सन्मानपूर्वक केली गेली आहेत. सध्या आपल्या देशाचा होत असलेला नैतिक ऱ्हास थांबवावयाचा असेल तर भारतीयांनी आपल्या संस्कृतीची आदर्श मूल्ये जोपासावीत , असे आवाहन श्री रेणापुरकर या महाकाव्यात पदोपदी करतात. **महापुरुषपुण्यस्मरणं सभाजनं**

च या नावाने २००९ साली प्रसिद्ध झालेल्या काव्यसंग्रहात एकूण १८ कवितांचा समावेश आहे. यात देशातील अनेक थोर पुरुषांचा सन्मान, प्रशंसा व गौरव केल्याचे दिसून येते. **आर्यसमाज गुणगौरवम्** या काव्यग्रंथात ६२ पद्यांचा समावेश असून यात आर्य समाजाची मानवतावादी वैदिक विचारसरणी विश्वकल्याणासाठी अत्यावश्यक असल्याचे प्रतिपादन श्री रेणापुरकर करतात.

वरील सर्व काव्यग्रंथामध्ये श्री रेणापुरकर यांनी छंदांचा विनियोग उत्तमप्रकारे केला आहे. यातील सर्व श्लोक वसंततिलका, उपजाति, द्रुतविलम्बित, शार्दूलविक्रीडित, शिखरिणी, मन्दाक्रान्ता, भुजंगप्रयात, चम्पकमाला या छंदातून निर्मिलेले आहेत. यामुळे वाचकांना रसास्वादन करीत असता एका वेगळ्याच आनंदाची अनुभूती होते. श्री रेणापुरकराच्या काव्याची भाषा अत्यंत सरळ, सोपी, परिष्कृत व मधुर स्वरुपाची आहे. त्यांचे काव्याचे वाचन करतांना वाचकवृंद विषयांशी एकरुप होतात व भान हरपून तल्लिन होतात.

श्री रेणापूरकरांच्या काव्यसाधनेचा उचित असा सन्मान महाराष्ट्र सरकार, केंद्र सरकार व विविध सामाजिक व धार्मिक संस्थांकडून वेळोवेळी झालेला आहे. १९७३ साली अजमेर येथे स्वामी दयानंद निर्वाण शताब्दी समारंभात त्यांना पुरस्कृत करण्यात आले. १९८५ साली मुंबई विद्यापीठातर्फे मराठा मंदिरात आयोजित कार्यक्रमात कुलगुरु डॉ.गोरे यांनी रेणापुरकरांचा सत्कार केला. १९८६ साली दिल्लीच्या देववाणी परिषदेने गौरव केला. १९८९ साली भारतीय विद्याभवन, मुंबई द्वारे आयोजित रेणापुरकरांच्या **काव्योन्मेषः** या काव्यसंग्रहाचे प्रकाशन तत्कालीन उपराष्ट्रपती डॉ.शंकरदयाल शर्मा यांच्या हस्ते झाले. त्यावेळी श्री शर्मा यांनी रेणापुरकरांच्या काव्यग्रंथाची मुक्तकंठाने प्रशंसा केली व आपल्या हातांनी त्यांचा जाहीर सत्कारदेखील केला. १९९३ साली वाराणसीच्या सार्वभौम प्रचारसभेतर्फे रेणापुरकरांना गौरविण्यात आले. १९९९ साली संस्कृतचे महाकवी पं.श्रीधर भास्कर वर्णेकर यांनीही त्यांचा गौरव केला.

२००२ साली महाराष्ट्र शासनाच्या वतीने तत्कालीन मुख्यमंत्री श्री विलासरावजी देशमुख यांच्या हस्ते श्री रेणापुरकरांना **कवी कुलगुरु कालिदास संस्कृत साधना पुरस्कार** देऊन गौरविण्यात आले. याच वर्षी अयोध्येच्या गोवर्धन पीठातर्फे श्री शंकराचार्यांच्या हस्ते **साहित्यरत्न** ही उपाधी बहाल करण्यात आली. २००६ साली पुणे

महानगरपालिकेच्या वतीने **ऋषितुल्य व्यक्तिमत्व** म्हणून पं.रेणापुरकरांचा गौरव करण्यात आला. २०१० साली प्रसिद्ध विचारवंत व माजी खासदार डॉ.जनार्दनराव वाघमारे यांच्या मार्गदर्शनाखाली लातूरच्या मराठवाडा साहित्य परिषदेने श्री रेणापुरकरांचा जाहीर सत्कार घडवून आणला व त्या कार्यक्रमात मान्यवरांनी त्यांना **काव्यतीर्थ** ही मानाची पदवी बहाल केली. याप्रसंगी महाराष्ट्र आर्य प्रतिनिधी सभेने त्यांचा अभिनंदन ग्रंथही प्रकाशित केला.

एका वर्षापूर्वी उत्तरप्रदेश सरकारने **कविर्मनीषी** हा पुरस्कार देऊन त्यांचा गौरव केला. तर गेल्याच वर्षी भारत सरकारच्या मनुष्यबळ विकास मंत्रालयाद्वारे दिल्ली येथे राष्ट्रपती श्री प्रणव मुखर्जी यांच्या शुभहस्ते ५ लाख रुपयांचा **महर्षी बादरायण व्यास पुरस्कार** प्रदान करुन पं.रेणापुरकर यांना गौरविण्यात आले. त्यांच्या जीवनातील हा सर्वोच्च सन्मान मानला जातो.

प्राचार्य रेणापुरकर यांनी देशभरात विविध ठिकाणी पार पडलेल्या आंतरराष्ट्रीय, राष्ट्रीय, प्रांतीय संस्कृत चर्चासत्रांत व कवी संमेलनांत अध्यक्षस्थाने भूषविली आहेत. त्यांच्या संस्कृत कविता देशातील अग्रगण्य मानल्या जाणाऱ्या संस्कृत नियतकालिकांतून वेळोवेळी प्रकाशित झाल्या आहेत. त्याचबरोबर आकाशवाणी व दूरदर्शनवरुन देखील त्यांनी संस्कृत काव्यवाचन केले आहे. श्री रेणापुरकरांच्या काव्यसाहित्यावर सध्या तीन ते चार विद्यार्थी विविध विद्यापीठातून पीएच.डी. करीत आहेत. खरोखरच केवढे मोठे हे गीर्वाणवाणीचे समृध्द संस्कारपीठ !

श्री रेणापुरकर हे केवळ कवीच नव्हते, तर समाजपरिवर्तनशील असे क्रांतिकारी व्यक्तिमत्व होते. आर्य समाजाच्या प्रेरणेने १९५३ साली त्यांचा जात पात तोडून आंतरजातीय विवाह झाला होता. क्रांतिदर्शी स्वा.सै.शेषरावजी वाघमारे (निलंगा) यांचे ते ज्येष्ठ जावई होत. त्यांनी आपल्या पारदर्शक, मृदू, सात्विक, प्रेमळ, विनम्र, निगर्वी अशा स्वभाव वैशिष्ट्यांद्वारे सर्वांची मने जिंकली होती. ते एक अजातशत्रू व स्थितप्रज्ञ वृत्तीचे ऋषितुल्य व्यक्तिमत्व म्हणून भावी पीढीला प्रेरणा देत राहतील. ते आमच्यातून निघून गेले असले, तरी त्यांच्या अजरामर काव्यरचना या समाजाला नवी दिशा व प्रेरणा देत राहतील, यात शंका नाही.

अशा प्रसिद्धी -परान्मुख थोर गीर्वाणवाणी उपासक सारस्वतास भावपूर्ण श्रद्धांजली व विनम्र अभिवादन !

●●●●●

ऋतुराज वसंतातील आरोग्य

– वैद्य विज्ञानमुनी

एका वर्षामध्ये बारा राशी (मेष, वृषभ, इत्यादी) असतात. त्या राशींवर सूर्याचे संक्रमण होत असते. त्यामुळे सहा ऋतू होतात. हे सहा ऋतू फक्त भारतातच असतात. दुसऱ्या देशात होत नाहीत. भारत हा यामुळे भाग्यशाली देश आहे. पृथ्वीच्या दुसऱ्या जमीनीच्या भागावर कुठे सहा महिने प्रकाश, तर कुठे सहा महिने अंधार असतो. हा प्रकार दोन्ही ध्रुवांवर चालतो. हे सहा ऋतू दोन-दोन महिण्यांचे असतात-

१)चैत्र, वैशाख (एप्रिल-मे) - वसंत ऋतू,
२) ज्येष्ठ, आषाढ (जून-जुलै) - ग्रीष्म ऋतू,
३)श्रावण,भाद्रपद (ऑगस्ट,सप्टें.)वर्षा ऋतू,
४)अश्विन,कार्तिक(आक्टो,नो.)शरद ऋतू,
५) मार्गशीर्ष, पौष (डिसें.,जाने.) हेमंत ऋतू
६) माघ, फाल्गुन (फेब्रु.,मार्च) शिशिर ऋतू,

यापैकी आपण सध्या चालू असलेल्या ऋतुराज वसंताविषयी चर्चा करू या !

शिशिर ऋतुमधील थंडीमुळे संचित झालेला कफ वसंत ऋतूत प्रखर होतो. कारण सूर्य हा आपल्या किरणांनी प्रकोपित झालेला असतो. यावेळी जठराग्नी मंद होतो. प्रकृती कफजन्य होते.यामुळे निमोनिया (छातीत कफ भरणे) दम्याचे प्रकार, सर्दी, पडसे, खोकला या गोष्टी वाढतात.

चिकित्सा- आपल्या शरीरातील वात, पित्त, कफ त्रिदोषांपैकी या वसंत ऋतुमध्ये कफ वमनाने कमी करता येतो. तसेच १) पंचकर्म २) जलकुंजर ३) योग्य आहार विहार ४) व्यायाम ५) औषधी या क्रिया द्वारे देखील कफाचे शमन करता येते. या सर्व विधीसाठी वैद्याकडूनच मार्गदर्शन घ्यावे. या संदर्भात आयुर्वेदाचार्य म्हणतात-

व्यायामः कफनाशाय वातनाशाय मर्दनम् ।
स्नानं च पित्तनाशाय मात्रया तान् समाचरेत्।।

या ऋतुमध्ये दिवसा झोपणे योग्य नाही. बागेत फिरणे, थंड वारा घेणे सोयीस्कर आहे. तेलाची सर्व अंगाला मालीश करणे हितावह आहे. शरीरावर घामोळ्या आल्या असल्यास चंदन आणि अगर यांना उगाळून लेप लावावा. या ऋतुमध्ये मधुर, आम्ल, स्निग्ध आणि जड अन्न खाऊ नये. म्हणजेच गुळ, साखर, चहा, कॉफी, दही, चिंच, तळलेले पदार्थ, आईस्क्रिम, पुरोण पोळी वा तत्सम हरबरा, दाळीचे व मैद्याचे पदार्थ खाणे टाळावे. या काळात सुकी चपाती, भाकरी, घुगऱ्या इत्यादी सारखे रूक्ष भोजन करावे. पाणी पिण्यासाठी वाळ्याचा उपयोग करावा. या काळात रात्री जागरणास निषेध आहे. प्रातः भ्रमण हितकारक आहे.

औषधी- बाळ हिरडा चूर्ण १ मासे + दुप्पट मधासोबत सकाळ-संध्याकाळ घ्यावे. यामुळे सर्दी, पडसे व कफ कमी होतो. तसेच द्राक्षासव, लोहासव, अश्वगंधारिष्ट,

दशमुलारिष्ट, लोहभस्म, कफकुठार,कफकेतु, कफकर्तारी व कडू फूलांच्या सेवनाने रोग नाहीसे होतात. म्हणूनच गुढी पाडव्यादिवशी कडू लिंबाची फुले खातात.

यज्ञ चिकित्सा – यज्ञामुळे अनेक रोगांचा संहार होतो. या वसंत ऋतुमध्ये खालील औषधाने, सामग्रीने, तुपाने व समिधांनी यज्ञ करावा. सामग्रीमध्ये दगडीफूल, तमालपत्र, पळसपापडी, लाजवंती, खडीसाखर, कापूर, देवदार, गुळवेल, अगर-तगर, केशर, इन्द्रजव, गुगुळ, कस्तुरी, लाल – पिवळे – पांढरे असे तिन्हीं चंदन, जावित्री, जायफळ, मोहरी, दालचिनी, उंबर, शंखपुष्पी, वाळा, चिरायता, गोखरू, गूळ, तूप, ऋतुफळे, भात वगैरेंचा प्रयोग करावा.

आयुर्वेदाचे आद्य गुरू चरकाचार्य म्हणतात – 'वसंत ऋतुमध्ये कटू, तिखट, तुरट रस ह कफास मारतात. तरी या रसाने युक्त आहार घ्यावा.' म्हणजेच कारले, कडुनिंबांची फुले, काळे मीरे, सुंठ, ओवा, लेंडी पिंपळी, आवळा, हिरडा, बेहडा इत्यादी पदार्थांचा अधिक श्रेयस्कर होय.

– संजीवनी आरोग्य मंदिर
गुरूकुल आश्रम, परळी-वै.
मो. ९९७५३७५७११

गौरव विशेष हृद्य सत्कार एका आर्य संपादकाचा

पूर्ण वैदिक विचारांना वाहिलेले महाराष्ट्रातील एकमेव असे हिंदी-मराठी साप्ताहिक म्हणून सर्वत्र ओळख असलेल्या **लातूर समाचार** या आर्य साप्ताहिकाचे यशस्वी संपादक, ज्येष्ठ पत्रकार व आर्य समाजी विचारांचे अनुयायी श्री दयानंद शंकरराव जडे यांचा नुकताच लातूर येथे आर्य समाज, गांधी चौक व महाराष्ट्र आर्य प्रतिनिधी सभेच्या वतीने आमंत्रित विद्वान, सभा व आर्य समाजाचे पदाधिकारी यांच्या हस्ते हृद्य सत्कार करण्यात आला.

गांधी चौक आर्य समाजातर्फे सर्वश्री उपप्रधान ओमप्रकाश पाराशर, संरक्षक बाबुराव तेरकर, मंत्री चंद्रभानू परांडेकर, प्रा.शरदचंद्र डुमणे, बाबुराव परांडेकर, वैजनाथराव हालिंगे आदींनी तर प्रांतीय सभेतर्फे स्वामी श्रद्धानंदजी सरस्वती, प्रधान डॉ. ब्रह्ममुनिजी,उपप्रधान राजेंद्र दिवे, पुस्तकाध्यक्ष प्रा.ओमप्रकाश होळीकर, व्यंकटेश हालिंगे, विज्ञानमुनिजीं आदींनी शाल,श्रीफळ व फेटा बांधून सत्कार करण्यात आला. यावेळी वैदिक विद्वान आचार्य भद्रकामजी वर्णी (दिल्ली) व भजनोपदेशक पं. सत्यपालजी सरल उपस्थित होते. सत्काराला उत्तर देतांना श्री संपादक जडे यांनी आपल्या जीवनातील सर्वात मोठा

गौरव असल्याचे व्यक्त करून हा क्षण ऐतिहासिक असल्याचे विशद केले.

दि. ७,८, व ९ मार्च २०१५ रोजी लातूरच्या गांधी चौक आर्य समाजाचा ८० वां वार्षिकोत्सव साजरा करण्यात आला. समाप्तीदिनी एका कृतिशील व निष्कामसेवी आर्य वृत्तपत्राच्या संपादकाच्या सत्काराची उद्घोषणा संयोजक प्रा.शरदचंद्र डुमणे यांनी केली, तेंव्हा उपस्थितांना एकच आनंद झाला व टाळ्यांनी त्यांचे स्वागत केले.

श्री दयानंद जडे हे आपले कर्मनिष्ठ पिता स्वा.सै.(स्व.) शंकरराव जडे यांचा वैदिक विचार प्रसाराचा वारसा लेखनीद्वारे तितक्याच उत्साहाने पुढे चालवित आहेत. वर्गणीदार मिळो की न मिळो, निःस्वार्थ भावनेने नियमितपणे गेल्या कित्येक वर्षांपासून या साप्तहिकांचे प्रकाशन होत आहे. आर्थिक झळ सोसून कुठेही, कांहीही तक्रार न करता किंवा कोणासही मदत न मागता केवळ महर्षी दयानंदांच्या सिद्धांतांचा प्रसार व्हावा, उदात्त हेतूने हे साप्ताहिक काढले जातेय, ही आर्यजनांसाठी मोठी आनंदाची गोष्ट आहे.

संपादक श्री जडे यांचे वडील स्व.शंकररावजींनी १९६४ साली आर्य विचारांचा प्रसार व्हावा व स्वातंत्र्य सैनिकांचे प्रश्न मार्गी लागावेत, यासाठी हे दैनिक सुरू केले. उस्मानाबाद व लातूर जिल्ह्यातील पहिले वृत्तपत्र होण्याचा मान लातूर समाचारला जातो. स्व.जडे यांचा आर्य समाजामध्ये सक्रिय सहभाग होता. कांही काळ ते पुस्तकाध्यक्ष देखील होते. आपल्यासोबतचा मित्र परिवार कम्युनिष्ठ विचारांचा असला तरी श्री जडे हे आर्य समाजांपासून दूर गेले नाहीत. पं. नरेन्द्रजी, पं.उत्तममुनिजी, पं. नरदेवजी स्नेही आदींच्या सान्निध्यामुळे व त्यांचे वैदिक विचार अधिक प्रबळ होत गेले व ते पक्के आर्य समाजी बनले. लातूरमधील पहिले वृत्तपत्र विक्रेते म्हणूनही त्यांचा लौकिक होता. हैद्राबाद स्वातंत्र्य संग्रामात त्यांनी उत्साहाने भाग घेतला होता. ढोकी (ता.जि.उस्मानाबाद) येथील करोडगिरी नाक्यावर पीन बॉंब टाकून तो नाका उध्वस्त करण्यात त्यांनी मोठी भूमिका बजावली. स्वातंत्र्य संग्राम काळात आपण एक स्वतंत्र वृत्तपत्र काढावे या विचाराने त्यांनी निजाम सरकारकडे परवानगी मागितली पण 'आर्य समाजी होने के कारण आपको अखबार निकालने की इजाजत नहीं दी जाती ।' अशी वारंवार उत्तरे येत. असे झाले तरी त्यांनी आपला प्रयत्न सोडला नाही. स्वातंत्र्यानंतर त्यांची ही इच्छा पूर्ण झाली. व लातूर समाचार सुरू झाले. आपल्या पित्याच्या पदूचिन्हांवर श्री दयानंद जडे हे तितक्याच उत्साहाने हे साप्ताहिक व दैनिक प्रसिद्ध करीत आहेत. त्याबद्दल त्यांचे आर्य जगतातर्फे अभिनंदन व दीर्घायुष्यासाठी कामना !

वार्ता विशेष

सोलापुरात पारिवारिक सत्संग सुरू

आर्य समाज सोलापुर अंतर्गत युवकांच्या 'आर्यवीर दल' या संघटनेतर्फे गेल्या तीन महिण्यांपासून शहरातील वेगवेगळ्या भागात पारिवारिक सत्संग उपक्रमाला सुरूवात झाली. दर रविवारी सायंकाळी आयोजित केल्या जाणाऱ्या या सत्संगाच्या माध्यमाने जनसामान्यांत आर्य समाजाच्या वेदाक्त कल्याणकारी विचारसरणीचा प्रसार व्हावा व युगप्रवर्तक महर्षी दयानंद सरस्वती यांचा उदात्त दृष्टीकोन लोकभिमुख व्हावा, हा या मागचा उद्देश आहे. तसेच सर्वाधिक कुटुंबे आर्य समाजाशी जोडली जावीत व आधुनिक युगात तरूणांना या विचारांनी प्रेरित करावे, ही देखील या उपक्रमामागची भावना आहे. या कार्यक्रमांना समाजातील सर्वस्तरातून प्रतिसाद देखील मिळत आहे.

आजपावेतो सर्वश्री नरसिंह बांगड, आदित्य सुधालकर, शंकरराव बिराजदार, सचिन करजगी, केदार पुजारी, शरद होमकर, आदी यजमानांच्या घरी अशा प्रकारचे पारिवारिक सत्संग मोठ्या उत्साहात पार पडले. या पारिवारिक सत्संगाचे पौरोहित्य आर्य युवक श्री वेदसुमन आर्य हे करीत आहेत. त्यांची विविध विषयांवर प्रवचने पार पडतात.

परभणीत अभिनव पद्धतीने होळी पर्व साजरा

आर्य समाज परभणीच्या वतीने होळी हा सण वैदिक सिद्धांतांनुसार अभिनव विशुद्ध पद्धतीने साजरा झाला. होळीच्या दुसऱ्या दिवशी धुलिवंदन दिनी विशेष यज्ञ, सामूहिक भजन,प्रवचन व विविध मनोरंजनपर कार्यक्रम आणि फुलांची उधळण करून हा आनंदोत्सव संपन्न झाला. आर्य समाजाचे उत्साही प्रधान श्री विजयकुमार अग्रवाल व त्यांच्या परिवाराच्या विशेष पुढाकाराने गेल्या वर्षीपासून हा कार्यक्रम मोठ्या प्रमाणात यशस्वी ठरत आहे.

या पर्वाचे विशेष आमंत्रित विद्वान पं. लक्ष्मणराव आर्य (गुरूजी) यांनी होळीचे महत्व विषद करीत मातृभूमीच्या धूलीकणांची वंदना करण्याचा व एक दुसऱ्यांवर फुलांची उधळण करून भेदभावना विसरण्याचा पवित्र उत्सव असल्याचे प्रतिपादन केले तर डॉ.नयनकुमार आचार्य यांनी अंतर्मनातील दुर्भावना दूर करीत फुलांप्रमाणे कोमल, सुगंधी व सुंदर बनण्याचे आवाहन केले.

याप्रसंगी हदगांव येथून आलेले भजनोपदेशक पं.सोगाजी घुन्नर यांनी प्रेरक भजने सादर केली. श्री डॉ. धनंजय औंढेकर यांच्या संकल्पनेतून **सांसदीय कामकाज** हा कार्यक्रम यावेळी पार पडला.

प्रारंभी पं. दिगंबर देवकते (शास्त्री) यांच्या प्रमुख पौरोहित्याखाली यज्ञ संपन्न झाला. यात सौ. कांचनदेवी व श्री विजयकुमार अग्रवाल, सौ.संगीता व श्री बालकिशन बिर्ला, सौ. मंगल व श्री बाबुराव आर्य, सौ.संध्या व श्री डॉ धनंजय औंढेकर हे आर्यदांपत्य यजमान म्हणून सहभागी झाले. सर्वश्री सुरेश मुंडे, दयानंद आर्य व विजय गावडे यांनी मंत्रपाठ केला. कांही महिला व पुरूष मंडळींनी भजने सादर केली. शेवटी वेदमंत्र उद्घोषात आर्य स्त्री-पुरूषांनी एक दुसऱ्यांवर विविध रंगबेरंगी फुलांची मोठ्या प्रमाणावर उधळण करीत हा आनंदोत्सव साजरा केला.

आओ...हम बच्चों को सुसंस्कारित करें...श्रेष्ठ मानव बनावें !

प्रान्तीय सभा द्वारा ग्रीष्मावकाश में विभिन्न स्थानों पर

दस मानवता संस्कार शिविर एवं हिंगोली में कन्या आर्य वैदिक संस्कार शिबिर - सूचना

प्रान्तीय सभा ने पू. स्वामी श्रद्धानन्दजी सरस्वती (हरिश्चंद्र गुरूजी) के गौरव में राज्य में १० स्थानों पर दो विभागों में **मानवता संस्कार एवं आर्यवीर दल शिविरों** का आयोजन किया है । साथही हिंगोली में **कन्या आर्य वैदिक संस्कार शिविर** होगा । इन शिविरों मे मान्यवर विद्वानों व भजनोपदेशकों को आमन्त्रित किया है ।

शिविरों की तिथियां	**स्थान** (विभाग १)	**स्थान** (विभाग २)
१) २७ अप्रैल से ३ मई २०१५ -	औराद (गुंजोटी)	परभणी
२) ४ से १० मई २०१५ -	औराद (शहा.)	हदगांव
३) ११ से १७ मई २०१५ -	शिवणखंड	देगलूर
४) १८ से २४ मई २०१५ -	गांधी चौक लातूर	धर्माबाद
५) २५ से ३१ मई २०१५ -	किल्ले धारूर	उदगीर

दि. १ से ७ जून २०१५ - कन्या आर्य वैदिक संस्कार शिविर

सरजूदेवी भिकूलाल भारुका कन्या विद्यालय, बस स्थानक के सामने, हिंगोली

अतः सभी माता- पिताओं तथा आर्य सज्जनों से निवेदन है कि वे अपने पुत्रों एवं कन्याओं को सुसंस्कारित करने हेतु उपरोक्त शिविरों में अवश्य भेजें ।

॥ कृण्वन्तो विश्वमार्यम् ॥

वेदों की ओर लौटो !

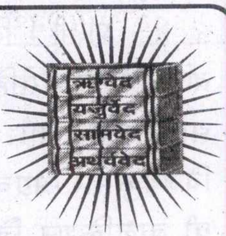

वेद प्रतिपादित मानवीय
जीवन मूल्यों को
जन–जन तक पहुँचाने हेतु
कार्यतत्पर सशक्त एवं समर्थ प्रान्तीय आर्य संगठन

महाराष्ट्र आर्य प्रतिनिधि सभा

(पंजीयन-एच. 333/र.नं.६/टी.इ. (७)१६७/१०४९,
स्थापना ५ मार्च १९७७)

– मानवकल्याणकारी उपक्रम –

- ‘वैदिक गर्जना’ मासिक मुखपत्र
- आर्य समाज दिनदर्शिका
- पू. हरिश्चन्द्र गुरूजी गौरव–‘मानवता संस्कार एवं आर्यवीरदल शिविर’
- आर्य कन्या वैदिक संस्कार शिविर
- पातञ्जल ध्यानयोग शिविर
- प्रान्तीय आर्य वीर दल प्रशिक्षण शिविर
- पुरोहित प्रशिक्षण शिविर
- मानव जीवनकल्याण वेद प्रचार (श्रावणी) उपाकर्म अभियान
- स्व. विठ्ठलराव बिराजदार स्मृति विद्यालयीन राज्य. वक्तृत्व स्पर्धा
- सौ. तारादेवी जयनारायणजी मुंदडा विद्यालयीन राज्य.निबंध स्पर्धा
- सौ. कलावतीबाई व श्री मन्मथअप्पा चिल्ले (आनन्दमुनि) महाविद्यालयीन राज्य. वक्तृत्व स्पर्धा
- विद्यार्थी सहायता योजना
- सौ.डॉ. विमलादेवी व श्री डॉ.सु.ब.काले (ब्रह्ममुनि) महाविद्यालयीन राज्य. निबन्ध स्पर्धा
- स्व.पं. रामस्वरूप लोखण्डे स्मृति संस्कृत राज्य प्रतियोगिताएं
- मानवजीवन निर्माण अभियान – विद्यालय व महाविद्यालयों के लिए (वैदिक व्याख्यानमाला)
- शान्तिदेवी मायर स्मृति मानवनिर्माण एवं सेवा योजना
- स्व. भसीन स्मृति एवं मायर गौरव स्वास्थ्य रक्षा एवं चिकित्सा शिविर
- शान्तिदेवी मायर विधवा सहायता योजना
- वैदिक साहित्य भेट योजना
- पंथ–जातिप्रथा निर्मूलन अभियान
- वैदिक साहित्य प्रकाशन योजना
- आपत्कालीन सहायता योजना
- पर्जन्यवृष्टि यज्ञ अभियान
- गौ–कृषि सेवा योजना
- स्वा.सै.श्री गुलाबचंदजी लदनिया गौरव राज्य योगासन प्रतियोगिता
- सौ.धापादेवी गु. लदनिया गौरव राज्य प्राणायाम प्रतियोगिता

आर्य सम्पादक श्री दयानन्द जडे का गौरव

लातूर (महाराष्ट्र) से प्रसिद्ध होनेवाले साप्ताहिक **लातूर समाचार** (मराठी/हिंदी) के सम्पादक श्री जडे का प्रान्तीय सभा की ओर से गौरव करते हुए श्री स्वामी श्रद्धानन्दजी एवं अन्य ।

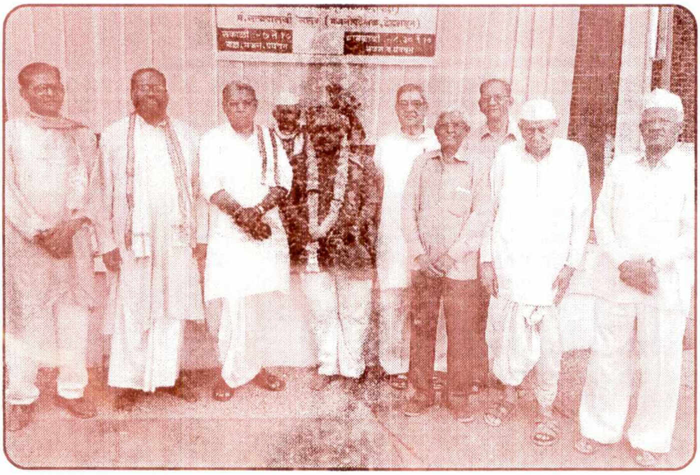

आर्य समाज गांधी चौक, लातूर की ओर से सम्पादक श्री जडे का सम्मान करते हुए सर्वश्री पाराशर, तेरकर, हालिंगे, परांडेकर, प्रा.डुमणे तथा आर्य विद्वान श्री वर्णीजी, पं.सत्यपालजी सरल।

महाराष्ट्र के मुनिजनों की ओर से श्री जडे का सम्मान करते हुए स्वामी श्रद्धानन्दजी । साथ में हैं सर्वश्री विज्ञानमुनिजी, सोममुनिजी, वैद्यमुनिजी, आनन्दमुनिजी, सत्यप्रियमुनिजी ।

REG.No. MAHBIL/2007/7493 *Postal No. L/Beed/18/2015-17

सेवा में,
श्री

षक -
मन्त्री, महाराष्ट्र आर्य प्रतिनिधि सभा,
आर्य समाज, परली वैजनाथ.
पिन ४३१ ५१५ जि.बीड. (महाराष्ट्र)

यह मासिक पत्र सम्पादक व प्रकाशक श्री मन्त्री, महाराष्ट्र आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा वैदिक प्रिंटर्स, परली वैजनाथ इस स्थलपर मुद्रित कर 'महाराष्ट्र आर्य प्रतिनिधि सभा' कार्यालय 'आर्य समाज, परली वैजनाथ ४३१ ५१५ जि.बीड (महाराष्ट्र)' इस स्थान से प्रकाशित किया।

परोपकार, समाजसेवा, वेदप्रचार, शिक्षाप्रसार तथा नागपुर शहर व विदर्भ, म.प्रदेश में आर्य समाज की गतिविधियों को बढाने में कार्यतत्पर आदर्श आर्य दम्पती

श्री.पं.सुरेन्द्रपालजी आर्य

(प्रसिध्द भजनोपदेशक व गीतकार, नागपुर)

जीवेत् शरदः शतम् !

सौ.करुणादेवी आर्या

(अवकाशप्राप्त मुख्याध्यापिका, मन्त्राणी, महिला आर्य समाज, जरीपटका, नागपुर)

के गौरव में 'वैदिक गर्जना' मासिक का रंगीन मुखपृष्ठ सस्नेह भेंट !